भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 05 | उदयपुर सोमवार 15 मार्च 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

होली आई रे, आई रे, होली आई रे

त्यौहारों का मुख्य उद्देश्य जनजीवन में हर्ष, उल्लास एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना होता है। इन त्यौहारों के पीछे देश की संस्कृति, सभ्यता, दन्तकथा, कहानियां, जातिगत परम्पराएं जुड़ी हुई रहती हैं। भौतिकवाद पर अध्यात्म की विजय तथा भक्त प्रहलाद के उस अत्यन्त प्राचीन आख्यान की पावन स्मृति लिए, जबकि अंधकार पर प्रकाश के, असत्य पर सत्य के एवं पाप पर पुण्य के शंख का जयघोष हुआ था, रबी की फसल की पूर्ण तैयारी के पश्चात फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ होलिकोत्सव मनाया जाता है।

राजस्थान में वैसे होली का कार्यारम्भ फाल्गुन शुक्ला एकादशी से ही प्रारम्भ हो जाता है। कुमारिकाएं तथा महिलाएं गोबर के नाना भांति के बड़ल्ले (बड़बूले अथवा बड़कुल्ले) बनाती हैं। होली माता की मूर्ति भी बनाती हैं जिसमें नेत्रों की जगह छोटी-छोटी कौड़िएं लगा दी जाती हैं। पुरुष वर्ग अपनी-अपनी मण्डली बनाकर बाग-बगीचों में 'गोठें' (दावत) करते हैं। बालिकाएं अपने-अपने मोहल्लों के घरों में से चूंगी एकत्रित करती हैं। चौराहे पर होली का डांडा रोपा जाता है। औरतें गीत गाती हैं। जनजीवन में अपार हर्ष की लहर आनन्दोलित हो उठती है।

होली के सिंघाड़े :

होलिका-दहन के एक महीने पूर्व गढ़ की होली जिसे 'रावली होली' भी कहते हैं, रोप दी जाती है। उसके ऊपरी अन्तिम सिरे पर घास के दो लम्बे हाथ बनाकर बान्ध दिये जाते हैं और उनके ऊपर ध्वजा की तरह लाल कपड़ा लगा दिया जाता है। जनता की होलिकाएं अपने-अपने पाड़े (क्षेत्र) में रोप दी जाती हैं।

ये होलियां हेमरे नामक वृक्ष की बड़ी-बड़ी शाखाएं होती हैं जो जंगल से काटकर लाई जाती हैं। इनके ऊपर विशेष प्रकार के बूंटीदार कांटे लगे रहते हैं जिन्हें 'होली के सिंघाड़े' भी कहते हैं। गूंदी (वृक्ष) के छिलकों के साथ जब इन सिंघाड़ों को बाल-बच्चे चबाते हैं तब जीभ ऐसी रच जाती है जैसी अच्छे से अच्छा स्वादिष्ट पान खाने से भी नहीं रचती है।

बालिकाएं होली माता के लिए गोबर के सौलह बडुल्ले बनाती हैं जिनमें बोर, चूड़ी, जीभ, कंघी, सिंघाड़े, सोपारिये, टणके, नेवरिएं, नारियल तथा हाथ-पांवों के दूसरे आभूषण होते हैं। इन बडुल्लों की मलाएं बनाकर होली को पहना दी जाती हैं।

होली पामणी रे लाल :

होली के पास ही बने चबूतरे पर सभी बालिकाएं संध्या समय एकत्रित हो होली के गीत गाती हुई मनोरंजन करती हैं। अपने-अपने घरों से होली की चूंगी के रूप में ज्वार की फूली, भूंगड़े (चने) और मुरमुरी (सेव) आदि लाकर सभी आपस में बांटकर खाती हैं। बालिकाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों में कुछ अत्यन्त लोकप्रिय गीत इस प्रकार हैं-

(1)

ऊभी रीझे होली थारे रखड़ी गड़ाई दूं।
डाबा में मत मेल होली फागण रा दिन चार होली
तिलोकचंद जी री नार होली वेगी आवजे।

(2)

ई कुण खेड़ादार होली पामणी रे लाल।
ई कुण वडूल्या वरावे होली पामणी रे लाल।

बालकों में भी एक नया उत्साह रहता है। होली जलाने के लिए वे अलग-अलग टोलियां बनाकर घर-घर से उपले, लकड़ी तथा घासफूस आदि लाकर होली के वहां ढेर-सा लगा देते हैं।

फागण आयो रसिया :

गढ़ की होली जलाने के बाद दूसरी होलियां जलाई जाती हैं। जलती हुई होली को देख औरतों के कलकण्ठों से स्वत: गीत फूट पड़ते हैं-

होली तो माता गढ़ से उतरी
कोई हाथ कांगण माथे वीर ये
रायां की होली।

होली की ज्वाला से गेहूं तथा जौ की बालियां सेकी जाती हैं। कहीं-कहीं पापड़ भी सेके जाने लगे हैं। राजस्थान में फाल्गुन मास में स्त्रियां विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करती हैं। इन्हें फागणिया, पीळिया, चूनड़ी अथवा बसंतिया कहते हैं। होली पर फागणिया ओढ़ने की बात गीतों में स्वाभाविक ढंग से उमड़ पड़ती है-

फागण आयो रसिया फागणियो रंगाइदो।
पीलिया में मच रही होली, रम रही होली
फागणियो रंगाइदो।

भाई-भाई रे गैर्‌या :

होली के कुछ जलने के बाद उसे पास ही के किसी कुए अथवा बावड़ी में डाल दी जाती है। इस दिन रात भर गैर खेली जाती है। आसपास के गांवों के लोग भी गैर देखने अथवा खेलने आते हैं। गैर खेलने के लिए एक विशेष प्रकार की लहरिएदार लकड़ी होती है जो गूंदी के छिलके लपेट कर आग में तपाकर तैयार की जाती है।

गोलाकार रूप में अत्यन्त तन्मयता के साथ गैर खेली जाती है। बीच-बीच में 'धन्त्योपतड़', 'भाई-भाई रे गैर्‌या', 'वाह-वाह रे गैर्‌या' के उच्चारण भी होते हैं जो उत्साहवर्धक होते हैं। चंग की थाप के साथ-साथ गाए जाने वाले गीतों की ध्वनि होली आने की सूचना देती है-

रंगीलो चंग बाजणू।
छबीलो चंग बाजणू।।
चंग आंगलियां बाजै।
चंग मूंदड़ियां बाजै।।
चंग पंचे के बल बाजै।
रंगीलो चंग बाजणू।।

इस अवसर पर होने वाले नृत्यों में घूमर, गैर तथा गींदड़ आदि नृत्य प्रसिद्ध हैं। एक घूमर गीत-

म्हारी घूमर छै नखराली ए मां
घूमर रमवा म्हैं जास्यूं।
म्हानै रमती ने लाडूला लादा ए मां
म्हारी घूमर रमवा म्हैं जास्यूं।

बालिकाएं 'होली आई ए सहेल्यां मिल खेलां लूर' गीत गाकर लूर खेलती हुई इठलाती, हंसती, मुस्कराती हुई फूली नहीं समाती हैं।

ढूंढ तथा धुलण्डी :

होली के दूसरे दिन होली की राख का तिलक लगाकर नवजात बाल-बच्चे 'ढूंढ़ाए' जाते हैं। होली के चारों ओर उनकी सात-सात परिक्रमा लगाई जाती है। 'ढूंढ़ने' वाले अपने साथ नारियल लाते हैं जिसे वहां बैठे गैर्‌ये खाते हैं। संध्या को सभी गैर्‌ये ढूंढ़ने वालों के घर जाकर 'भुजिये-पापड़ी' खा आते हैं। इनमें बुड्ढ़े भी सम्मिलित होते हैं।

यह दिन धुलेड़ी, फाग, दुलण्डी, धुलण्डी अथवा धुलेल खेलने का होता है। पास ही जंगल से ढाक के फूल लाकर उनका रंग बनाया जाता है। इनके अलावा लाल, पीला, नीला, गुलाबी आदि रंग छांटकर दिनभर फाग खेलते रहते हैं। नन्हे-नन्हे बच्चे अपने हाथों से रंग की पिचकारी छोड़ते फूले नहीं समाते हैं। फाग खेलने के पश्चात सभी स्नान आदि से निवृत्त हो शुभ्र वस्त्र धारण कर सगे-सम्बन्धियों तथा जान-पहचान वालों से अभिवादन करने जाते हैं।

होली के चले जाने के बाद भी डांडिया और गैर चंग की चलत के गीत कानों में टकराते रहते हैं। 'रंगीलो चंग बाजणो', म्हारी सांवली सूरत पर किण डारी पिचकारीजी' तथा 'होली खेलो रे चतुरभुज चार घड़ी होली खेलो रे' जैसे गीत गुनगुनाते हुए सभी अगले वर्ष तक होली के आने की प्रतिक्षा करते रहते हैं।

-म. भा.

(दैनिक हिन्दुस्तान, 02 मार्च, 1961 से साभार)

लोकचित्त की आराधना

-नंद चतुर्वेदी-

होली के फागुनी दिन अराजकतावादी ही होते हैं ; उद्दंड और भारतीय-जीवन को आध्यात्मिकता के मिथक से दिल्लगी करते। कविगण भी नहीं समझते कि तन-मन को क्या हो गया है। हवाओं को क्या हो गया है। नदियों को क्या हो गया है। कुछ तो हो ही गया है। कुछ और ही तरह से सर-सरितायें सरस हो गई हैं। और ही तरह से भंवरे कुसुमावलियों के आस-पास आने-जाने लगे हैं। पर्वतों के गले में सरिताओं ने भुजायें डाल कर उन्हें सनाथ कर दिया है। जयशंकर प्रसाद के शब्दों में - 'भुज-लता पड़ी सरिताओं की शैलों के गले सनाथ हुए।'

मदनोत्सव के ये दिन कवियों के लिए अद्‌भुत प्रेरणा और आनंद के दिन हैं। वर्जनाओं और निषेधों की जकड़न सहज और अनायास ही ढीली पड़ जाती है। होली के दिनों में कुछ भी कहो, बुरा नहीं लगेगा। रसिया गीतों में काम-केलि की क्रियाओं का उन्मुक्त वर्णन होगा। चंग, डफ, ढोल, मृदंग नानारूपों में काम-तरंगों को जगायेंगे। कविगण संकोच छोड़कर होली की कविताओं में रति-कर्म की सहज क्रीड़ाओं का वर्णन करेंगे। पद्‌माकर कवि लिखेंगे-

फाग की भीर अबीरन में गहि,
गोबिन्द भीतर ले गई गोरी।
माई करी अपनी 'पद्‌माकर',
ऊपर नाय अबीर की झोरी।।
खींच पितम्बर कम्मर तें,
सुबिदा दई मीड़ कपोलन ऐरी।
नैन नचाय, कहीं मुसकाय,
लला फेर खेलन आई हो होरी।।

'भाई करने के' क्रम में पीताम्बर खींच लिया जाएगा और फिर किसी भोलेपन से इतराते हुए कहा-पूछा जायेगा, 'होली खेलने फिर आओगेन!' इन्हीं दिनों की उन्मुक्तता में होली खेलते प्रसन्न नायक-नायिका फिसल जायेंगे और संयोग-श्रृंगार की रति-मुद्रा बन जायेगी-

एक ही संग दोऊ रिपटे सखि,
वे भये ऊपर मैं भई नीचे।

यह देखने की बात है कि भारतीय-अध्यात्म की पाठशाला इन दिनों अवकाश पर रहती है। लोकचित्त इन दिनों अनंग साधना के अनायास खुले द्वारों पर दस्तक देता है। प्रकृति हजारों रंगों को, वृक्षों को, पुष्पों को मुक्त हस्त अनुदान देती है।

यादों में गुरुकुल बसे

याद आ रहे शांति बांठिया, अरु बनवारी लाल।
छोटीसादड़ी गुरुकुल में, हंसते दे-दे ताल।।
हंसते दे-दे ताल, गुदगुदी अपनी मौज में।
मुन्ना की पियर्स, झाग दे खिले हौज में।।
सिरेमल कुंदन दरड़ा, अच्छे साथी थे।
मस्त आंजना, रोड़ीलाल भी संगाती थे।
कह संस्कारी ढुल्लन, गुरु ब्रह्मा थे सागरमाल।
राधामोहन सुराणा पुख, शोभा गुरु अरु धरमपाल।।
गृहपति आदर्श सभी के नानालाल थे मट्‌ठा।
चांदमल नाहर मंत्रीजी लगा न कोई बट्‌टा।।
दूर-दूर तक देता था टंकार वहां का घंटा।
विपिन नरेंद्र महेंद्र पढ़े चावत को रहा न टंटा।।

होली पर ईलोजी की स्थापना

-बनवारीदत्त जोशी-

होली के दिन कपासन में ईलोजी चौक में ईलोजी की अस्थाई प्रस्तर प्रतिमा स्थापित करने की परम्परा है। महाराणा की ओख के कारण यहां शीतला सप्तमी आठम को मनाई जाती है। इसी दिन ईलोजी चौक से गैर रमते खिलाड़ी नये बाजार पहुंचते हैं। वहां एक और दूसरा दल गैरियों को आगे बढ़ने से रोक देता है।

दोनों दलों के बीच खूब हंसीठट्‌ठामय गालीगलौच होता है। सन् 1972 से 1976 के समय मैं वहीं प्रिंसिपल रहा तब का नजारा ही कुछ और था जो अधिक रंगीन मिजाजी तथा हास्य के अश्लील तरानों की छेड़ाछेड़ी से लबालब आन्दोल्लास से भरपूर था। उस समय तो गालियों की प्रतियोगिता भी होती थी जिसमें खुले मन से लोग भाग लेते थे। इस प्रतियोगिता का पुरस्कार बंकटलाल सोमानी ने जीता था। अब तो सोमानीजी हमारे बीच नहीं हैं। वर्तमान में प्रहलादराय सोमानी, प्रभुलाल टेलर जैसे लोग इस परम्परा का निर्वाह कर होली को खुशनुमा बनाने को उत्साहित रहते हैं।

डॉ. देव कोठारी सम्मानित

उदयपुर (का. सं.)। राजस्थानी के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. देव कोठारी को गत दिनों श्रीगंगागनगर तथा जोधपुर में सम्मानित किया गया। श्रीगंगानगर में सृजन सेवा संस्थान द्वारा उन्हें सृजन सम्मान से विभूषित किया गया। डॉ. कोठारी ने कहा कि राजस्थानी भाषा की मान्यता का मुद्‌दा युवाओं के रोजगार से जुड़ा होने के कारण युवाओं को इस मुद्‌दे में अग्रणी भूमिका निभानी होगी। सृजन के अध्यक्ष डॉ. अरूण शहैरिया ने कहा कि राजस्थानी को उसका उचित हक दिलाने के लिए हम हर समय हर कदम साथ हैं।

जोधपुर में जेएनवीयू के राजस्थानी विभाग में राजस्थानी और उसकी बोलियों पर बोलते हुए डॉ. कोठारी ने कहा कि यों तो राजस्थानी का अस्तित्व 9वीं शताब्दी से है पर उसका लिखित स्वरूप 11वीं शताब्दी से मिलता है। विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी बोराणा ने व्याख्यानमाला की भूमिका पर प्रकाश डाला। मूर्धन्य विद्वान डॉ. लक्ष्मीकान्त व्यास ने कहा कि जिस भाषा में

जितनी अधिक बोलियां मिलती हैं वह उतनी ही समृद्ध तथा सशक्त मानी जाती है।

सामने - किशन दाधीच, पूनम दईया, महेन्द्र भानावत, कुंदन माली, श्रीकृष्ण 'जुगनू'
पीछे - नंद चतुर्वेदी, भगवतीलाल व्यास
एक दशक पूर्व 2001 की होली पर डॉ. महेन्द्र भानावत के घर

बीकानेर में कई रंग हैं होली के

-तुलसीदेवी-

होली रंगों का त्यौहार है। रंग भी एक नहीं, अनेक देखने को मिलेंगे। ये रंग प्रत्येक गांव और शहर में हैं पर बीकानेर में जो रंग खिलते-खिलखिलाते हैं वे अद्‌भुत ही हैं। रंगों के कारण होली मौज-मस्ती का त्यौहार है। ब्रजभूमि तो रंगरसियों का गढ़ ही कही गई है। वहां के वृन्दावन, मथुरा की होली अपने अन्दाज में सर्वथा निराली है।

वैसे ही राजस्थान के बीकानेर की होली भी अनूठी है। यहां के लोगों का होली मनाने तरीका अपनेआप में अलग ही है। नेता, पुलिस, पागल, शिव, साधु से लेकर सामान्य से विशेष तपके, बिरादरी के

लोगों तथा बन्दर रीछ और ख्याल-तमाशों वाले स्वांग एवं लीला पुरुषों के स्वरूप बनकर मनचले लोगों की टोलियां घूमती नाचती-गाती नजर आयेंगी। दूल्हे की ऐसी बारात भी मिल जायेगी जिसकी मंजिल कहीं नहीं है। यह बारात बिना दुल्हन के ही लौट जाती है।

यहां का स्त्री-पुरुष का फुटबॉल का मैच भी निराला है। इसमें एक तरफ स्त्री तो दूसरी तरफ पुरुष का वेश धरे स्वांगीड़े होते हैं। रम्मत का आयोजन तो यहां हर गली, गुवाड़, मोहल्ले में दिखाई देता है। यह खुले चौक में पाटे पर होता है। इसमें प्राय: इतिहास तथा लोकप्रसिद्ध आख्यान-कथाओं के जीवन-प्रसंगों पर रात-रात भर बड़े मनोरंजक तथा हंसी से लोटपोट प्रसंग प्रदर्शित होते हैं। इनमें अमरसिंह राठौड़ तथा हेड़ाऊ मेरी की रम्मतें सर्वाधिक प्रसिद्धि लिए हैं।

होलिका जलने के बाद उसकी भस्मी एक-दूसरे पर उड़ेलकर स्वस्थ रहने की कामना करते हैं। इससे पूर्व होलिका दहन के लिए भरभोलियों अथवा बड़कुल्लों की मालाएं बनाई जाती हैं। गोबर के विविध आभूषणों में मिष्ठान्नजनित चमचम, रसगुल्ले, फीणी, घेवर, जलेबी, चक्की, बरफी आदि की माला बना कन्याएं अपने भाई द्वारा होलिका का सिंगार कर फूली नहीं समाती हैं। ये भरभोलिये रंग-बिरंगी कटपीसी कपड़ों के टुकड़ों एवं कांच के गोल टुकड़े लगाकर और अधिक आकर्षक बनाये जाते हैं। इन्हें कलात्मक परिवेश देने माताएं तथा बहिनों का भी पूरा सहयोग रहता है।

बीकानेर में माला घोलने की परम्परा भी है। बहिनों द्वारा अपने भाई के सिर पर भरभोलियों की माला को सात बार घुमाई जाकर फिर उसे होलिका के साथ जलाई जाती है। इसके लिए पांच नग भरभोलिये मूंज की डोरी में पिरोये जाते हैं और भाई पर सात बार वारते हैं ताकि उस पर चढ़ी बला शमित हो सके।

ब्रज की लट्‌ठमार होली की तरह बीकानेर की डोलचीमार होली प्रसिद्ध है। चमड़े व लोहे की बनी डोलची में पानी भरकर एक-दूसरे पर मारते हैं। यह मार बड़ी तेज मारक होती है। यहां तक कि जहां यह मार पड़ती है वहां की चमड़ी नीली पड़ उभार देती सूज आती है।

धुलण्डी वाले दिन यहां तनी को देखने पूरा शहर उमड़ पड़ता है। इसमें सण की रस्सी में जूते, चप्पल, हांडी पिरोकर उसे तलवार से काटा जाता है। जब यह कट जाती है तो इतना गुलाल उड़ाया जाता है कि आसमान गगनघोर हो उठता है। यहां के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायणजी मन्दिर की फूलों की होली बहुत प्रसिद्ध है। इसमें एक-दूसरे पर फूलों की बरसात कर होली खेली जाती है।

गुमशुदा ग़फ़लतजीवी

संकेत : इन ग़फ़लतजीवियों में प्रयत्न करने पर चाहें तो सर्वश्री नंद चतुर्वेदी, पूनम दईया, भगवतीलाल व्यास, किशन दाधीच, देव कोठारी, राजेन्द्रमोहन भटनागर, महेन्द्र भानावत, रजनी कुलश्रेष्ठ, दिलीप धींग, क़मर मेवाड़ी, शकुंतला पंवार, श्रीकृष्ण 'जुगनू', कुंदन माली, शैलेष व्यास, कैलाश 'मानव' तथा तुक्तक भानावत के नाम संकेततः ढूंढ़ सकते हैं।

बुरा न मानो होली है :

बुरा न मानो, बुरा न सोचो, बुरा न समझो होली है।
परंपरा है सुघड़ सुहानी, जीवन-रस की गोली है।।
होली है दुष्कर्म जलाने की, पवित्र मन पाने की।
हंसी मसखरी शब्द रंग स्वर रस रोली की होली है।।

तिलक करो गोबर राखोड़ा :

दंद फंद सब ले गये, जंद भये आनंद।
पीछे कुछ नहीं रह गये, धूल फूल गुलकंद।।
धूल फूल गुलकंद, बाज दोने सब खाली।
धोती और लटकता जब्बा, जेब फटी है काली।।
कह भसवाड्या लाल, करम का ये ही टीका।
तिलक करो गोबर राखोड़ा, कीचड़ गली का।।

पूनम ने भी नहीं चांदनी देखी :

देखा नहीं सांड सा कभी, दहाड़ा ढेंचु-ढेंचु।
गैया से भैया स्याणे ही, रहे ढींगले घेंचु।।
रहे ढींगले घेंचु, भाग में बैल मूतणी लेखी।
पूनम होकर कभी, चांदनी भी नहीं देखी।
कह डंठल कविराज, मकई के डूंडे काड़े।
उपयोगी नहीं लेश, ढोर खाते हैं बाड़े।।

अणभणिया री आंख्यां खोली :

हाथी रे होदे बिठाण, अणभणिया सूं तोरण चटकायो।
कंठां रो साहित खंखेर्‌यो, भणिया रो द्वारो खटकायो।।
कावड़ तोरण इलोजी गणगौर ईसर कठपुतली बोली।
फड़ां विदेशां तांई पोंची, कारीगर री आंख्यां खोली।।
गांधीजी रे रेंट्‌ये चरखे, ज्यूं घर-घर मां पूणी काती।
लोककलावां त्यूं जन-जन मां, भींतां मंडती सजती जाती।।
कह सकलीगर ज्यूं रूई ने पींज-पींज ने रेशा कीधा।
लोककलावां रंगरेजण ज्यूं रंगी, सबां रा लावा लीधा।।

बनी रहे बेंडे पर बांडी :

अब कुछ-कुछ सुनने लगा, यह क्या बात हुई।
कोई किसी का नहीं सगा, सुबह हुई और शाम हुई।।
याद आ रही, वह भलमानस पर मैं बेंडा।
बेंडी कहता रहा, अकल का गेंडा।।
मित्र न आते, मैं चलता नहीं, हलो-हलो भी छूटा।
करमां री गत टारत नाहीं, भाग आपणा फूटा।।

हरकारा ज्यूं राखां खबरां :

लपकझपक अब दिन को करता, राती आंधो आवे।
कुण कणी रो भाग खोलियो, अकल उधारां जावे।।
अकल उधारां जावे, म्हां हां बिरमा विष्णु महेश।
हरकारा ज्यूं राखां खबरां, देश-देश-परदेश।।
जीवराज री अरजी बांचां, कागज पाना लीरा।
घणां काम रा कामदार हां, सबसूं अलगा तीरा।।
पट्‌टा कीने बतावां, काम गंडकांऊं पड़ियो है।
दाल गले ना गले, एकलो ही लड़ियो है।

पड्‌या है बिस्तर मांदा :

कुशलक्षेम साठोत्तरी, हर पेड़ी यद्यपि नहीं।
खुश राखे व्हाला मिशन, नेम नियम तथ्यपि कहीं।।
नेम नियम तथ्यपि कहीं, स्नानघर की फिसलन हो।
पट्‌टे पट्‌टी बंधे, दुपट्‌टे की घिसलन हो।।
कह झांदेश्वर देव, पड्‌या है बिस्तर मांदा।
बीबी टेंका करे, रोटल्यां खावो कांदा।।

यौवन गुजराती चाल मेवाड़ी :

यौवन गुजराती रहा, अब मेवाड़ी चाल।
वहां सभी सरपट चला, यहां हाल बेहाल।।
यहां हाल बेहाल, टेकरी ओलपोल है।
ऊबड़ खाबड़ टीम्बे, टें-टें दाल झोल है।।
शिक्षक है बेशक डोफर पूरी की पूरी।
राजस्थानी कवि लोचक फफूंद की धूरी।।

भाग रो छींको टूटे :

उमर सफेदी, पण काला ही रह्या।
पग में भमरी, पण व्हाला ही रह्या।।
बंधीयोड़ी है नकेल, राज री हींदरीऊं।
केई बातां है सेठां, कान्योमान्यो क्यूं।।
फाइल चलावां, जतन मोकळा धरां।
भाग रो छींको टूटे, ढोकळा करां।।

लौट आओ अतीत फिर :

भजनी अब सार्थक हुई, नाम रूप रस गंध।
भंवरा गूंजत बंद है, मंद पड़ा मकरंद।।
वो ही तेवर कविताई, गोष्ठी मुस्कानें।
मनवारें झगड़े बिछुड़ें, मानें नहीं मानें।।
किंतु सरस्वती की सेवा छककर होती है।
चौखट पर बैठी-बैठी कविता रोती है।।

कदी-कदी जीवड़ो ललचावे :

कदी क आवे हबड़का घाटां पर गंठा मारां।
केई रपस्या मर्‌या फेर भी तरे तो तारां।।
भावड़ में अब भी वासूंदी दूध जलेबी आवे।
मनड़ो रोके कदी-कदी जीवड़ो ललचावे।।

बनना था कुछ और :

सोच समझ ने करो हांगणो हगपण लाला।
खाज कुचरणी पड़ै घणा कुचरो ना छाला।।
बनता था कुछ और कहां बन गया लिखाड़ा।
गर्मी की मौसम में जैसे ठिठुरा जाड़ा।।

होगये सभी नारायण :

नारायण-नारायण करते, हो गये आप सभी नारायण।
नारायण झुनझुना न समझो, करते रहो यही पारायण।।
हंसा तो मोती चुगता है, कागा कभी न चुगता आया।
नारायण की कृपा होगई, समझा नहीं कोई भी भाया।।
दिव्यांगों की कौन ले रहा सुध, कोई सेवा करता है।
धाय माय बन आन पड़े तो कौन कलेजा धरता है।।
सचमुच है भगवान वहीं पर, जहां शुभ्रता घालमेल नहीं।
ईश्वर कोई पाले समझो, अन्यामन्या का खेल नहीं।।

चेटक र्‌यो अणदाग :

हींग न लागे फटकड़ी, बम बोर्‌या री जादूगरी।
कूदो फांदो गुलच्यां खावो, संभल्या री है ब्हादुरी।।
गांवां मां ही ढूंढ़ो रोड़ी, रतन मिले अण भाग।
अस्यो कुण जो दाग न लागे, चेटक र्‌यो अणदाग।।
जो पोमावे नींमावे, कतरो ही ऊंचो चढ़े भूत।
वो चरम दाम भी चरण, दास बण लड़ै पूत।।

रंगत लावणी लंगड़ी खड़ी :

आयो हरकारो रिसि कण्व रो सनेसो लायो।। टेर।।
सुरंगी शकुन्तला करे, उदियापुर मां वास।
शाकुन्तलम चलावे लूंठो, निरत सिखावे खास।।
देसड़लो घूमीं परदेसल, सात समदरां पार।
पणियारी मीरां मूमल, ने बणीठणी सिणगार।।
बणीठणी सिणगार, पिचोत्तर पार चकोरी।
वही हकीकत हालचाल, पुलकाती गोरी।।
गुरुमां बणी नगीना सोवे, चेल्यां वारी जावे।
कह सुगरा कविराय, हरख ने मन ही मन पोमावे।।

सुललाम वंदन होली का :

जिसकी तुक चल गई, रहा क्या बाकी चलना।
हर की पेड़ी हाथ लगी, क्या रोना धोना।।
बहुत होगया जो होना था, अब क्या बाकी।
रहो सदा अलमस्त, मौज मस्ती नहीं थाकी।।
पार्श्वकल्ला में कोई, अलाबला नहीं घेरा।
शब्दों का रंजन, सज्जन मित्रों का फेरा।।
सबको मंगलमय, होली की राम-राम है।
छोटे-बड़े सभी को, वंदन सुललाम है।।

जय-जय राजस्थान :

जय-जय राजस्थान, हमारा जय-जय राजस्थान।
अपनी ही नदियों का पानी, अपना ही शैलेश्वर देव।
अपना ही है वीर शिरोमणि, अपना कुंभलमेव।।
बिराजै एकलिंग भगवान।
जय-जय राजस्थान।
या प्रताप री हल्दीघाटी, चेतक रो स्वभिमान।
पद्‌मणि मीरां री चित्तौड़ी, आन बान अर शान।
वधावो चार धाम रो मान।
जय-जय राजस्थान।।

- डॉ. तुक्तक भानावत
महासचिव, सम्प्रति संस्थान के सौजन्य से

कोरोना काल बना विकराल

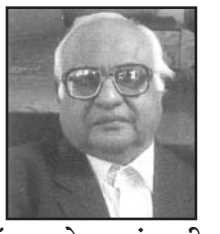
डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी

माधव दरक

हरमन चौहान

उत्तम पुरुष छीना कोरोना, काल बना विकराल।
सबके हर मन ले गया, असमय का दुष्काल।।
असमय का दुष्काल, दरक माधव भी खिसके।
यहां पता चलता है, कोई कहीं न किसके।।
तीनों ही हिन्दी राजस्थानी के कवि थे।
छंगाणीजी जैसलमेरी लोकदृष्टि की सुछवि थे।
व्यंग्य उक्ति से चौकन्ने, चौहान बहारें बरसाते।
एड़ो राजस्थान कंठ-कोकिल से माधव तरसाते।।
कह गुल्लक कवि नाथ, गुड़िंदा खाते-खाते।
देखा दिन न रात, सुबह की सुपरभाते।।
किसको टीला करूं, गुलाबी होली रोली।
हमझोले मिल जाय, यकायक खोजत टोली।।

कविता सर्वाधिक असरकारी

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

साहित्य में कविता सर्वाधिक असरकारी विधा है। जो काम शास्त्रों द्वारा संभव नहीं वह कविता द्वारा सरल और सुगम होता देखा गया है। बड़े-बड़े शासकों द्वारा प्रयोग में लाये गये हथियार आज जिन्दा नहीं हैं लेकिन सूर तुलसी मीरां की कविताएं आज भी लोकजीवन को प्रेरित एवं अनुप्राणित किये हुये हैं।

कविता का सच शाश्वत और स्थायी होता है। उसके सामने सत्ता की ताकत भी घुटने टेकती देखी गई है। इसीलिए कविता शाश्वत है। संजीवनी है। दिनकर की 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' कविता ने सत्ता के पायों को बहुत गहरे तक हिला दिया था। सामंती युग में तो कवियों को लाख तथा करोड़ पसाव तक का सम्मान दिया गया था।

कवियों को स्वयंभू कहा गया है। कई उदाहरण मिलेंगे जब कवियों ने किसी की परवाह नहीं की और राजा महाराजा तक को बौना कर दिया। राजदरबार में कवियों की जो इज्जत की जाती थी, इतिहास के पन्ने आज भी उनकी साक्षी देते जीवित बने हुए हैं। राजस्थान में तो युद्ध की ललकार ही कविता देती थी और कवि के एक हाथ में कलम रहती जबकि दूसरा हाथ तलवार चलाकर अरिदल को मौत के घाट उतार अपना पौरूष प्रदर्शित करता था।

ऐसे कई मौके आये जब कविता ने स्याही की बजाय खून दिया और सत्ता को पत्ता समझ पतझड़ित किया। वह कविता ही थी जिसने मेवाड़ महाराणा भीमसिंह को 'भीमा थूं भाटोह मोटा मगरा मायलो' कहकर ललकार दी और दूसरे ही क्षण 'कर राखूं काटोह शंकर ज्यूं सेवा करूं' कहकर कवि ने जो आदर और इज्जत पाई उससे यह सोरठा ही नहीं, महाराणा भीमसिंह भी इतिहास-लोक का अमर पन्ना बने हुए हैं। बिहारी ने तो अपने एक-एक दोहे पर एक-एक स्वर्ण मुद्रा प्राप्त की और प्रेम में पगलाये जयपुर के राजा जयसिंह को झकझोर दिया।

साहित्यिक पत्रों की होली

- कला-समय, संपादक, भंवरलाल 'वत्स'

कला समय, काला समय, समय बड़ा बलवान।
असमय कुछ होता नहीं, भंवर न गूंजत गान।।

- हिन्दी जगत, संपादक, ऋतुपर्ण

निज भाषा हिन्दी जगत, गूंगा राष्ट्र अवर्ण।
देशज रुत बैरण लगे, ज्यों झड़ते ऋतुपर्ण।।

- चौमासा, संपादक, अशोक मिश्र

चौमासा मेहू बिना, रंग बसंत न शौक।
पूंछ बिना ज्यूं कपि लगे, फूले नांहि अशोक।।

- मड़ई, संपादक, कालीचरण यादव

मड़ई में धूणी रमे, कालीचरण महाराज।
भजनानंदी साथ हैं, फटा राग बेसाज।।

- बिणजारो, संपादक, डॉ. नागराज शर्मा

रजबंको प्रताप मीरां पदमण माथै डंको वारो।
चार दसक स्यूं राजस्थानी रंग देयर्‌यौ बिणजारो।।

- शब्द रंजन की जै होली बंचावसी

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 मार्च 2021

सम्पादकीय

पुरस्कार में भी प्रदूषण की हवा

साहित्यसेवी जो साहित्य की विविध विधाओं पर सम्मानजनक लेखन कर मां भारती की आरती उतारते अपना स्वर बुलन्द कर रहे हैं उनका उचित रूप से उत्साहवर्धन करने, सम्मानपूर्वक बहुमान करने की परम्परा उचित तथा स्वागत योग्य है।

यह सम्मान खासतौर पर दो रूप लिए होता है। एक तो सम्मान के साथ अच्छी-खासी से लेकर थोड़ी-बहुत राशि के साथ होता है तथा दूसरा राशि सहित शॉल, दुशाला, दुपट्टा या स्मृति स्वरूप मोमेंटो के साथ साधारण से लेकर भव्य समारोह लिए होता है।

सम्मानों में कुछ सम्मान अच्छे चर्चित तथा पैठ लिए होते हैं। कुछ मात्र दिखावे के रह जाते हैं। इनमें अधिकतर सरकार से सम्बद्ध होते हैं जिन्हें करने होते हैं। वे औपचारिक बनकर रह जाते हैं। कभी-कभी अच्छी राशि होने पर भी आये-गये हो जाते हैं। इन्हें प्रदान करने जो विशिष्ट, अतिविशिष्ट व्यक्ति आते हैं उनकी आवभगत और मर्यादा का ध्यान ही महत्त्वपूर्ण होता है। सम्मानित बिचारा ही बना रह जाता है।

संस्थागत सम्मान कुछ समय तक तो अच्छी प्रसिद्धि लिये रहते हैं पर धीरे-धीरे वे भी अपना हित-चिन्तन साधते अधिक लगते हैं। अपने हित-चिन्तन में जरूरी नहीं कि देय संस्था हो। उसके द्वारा निर्मित विशेषज्ञों की भूमिका संदिग्ध हो जाती है।

छोटे संस्थान स्वस्थ मन और भावना लिए उद्देश्यपरक पुरस्कार प्रारम्भ करते हैं पर अभावों का रोना रोते रहते हैं। इस कारण धीरे-धीरे अपना प्रभाव क्षीण किये रहते हैं। कुछ अच्छे संस्थान जिस शाही सम्माननीय रंग-ढंग और माहौल से समारोह सम्मान प्रारम्भ करते हैं, धीरे-धीरे उनमें सकारात्मक बढ़ोतरी होती वे अंचल से अन्तर्राष्ट्रीय फलक तक पहुंच कर भी अपनी गरिमा और उद्देश्यों को उसी शालीनतापूर्वक बरकरार रखते यशजीवी बने रहते हैं। उनमें अन्यों की घूसपैठ भी नहीं होती और वे अतीतजीवी लोकप्रतिष्ठा के भी रखवारे का सुदृढ़ मन लिये होते हैं।

सरकारी पुरस्कार तो सत्तादल की मनमर्जी के कंधों पर सवार होते हैं। वे सुविधा पुरस्कार भी बन जाते हैं। जिसको देने होते हैं उसके गवाक्ष खुल जाते हैं और जब नहीं देने का मन बनता है तो कोई बहाना कर देते हैं या चुप्पी साध लेते हैं।

ऐसा भी होता है जब कोई निर्णय ठीक नहीं लगने पर प्रारम्भकर्त्ता संभ्रांत व्यक्ति पुरस्कार प्रदान करना ही बन्द कर देते हैं पर अपनी पैठ-प्रतिष्ठा को कायम रखने के विश्वासी होते हैं।

आपसी लेनदेन का माहौल भी कहीं-कहीं कुछ हवा प्रदूषित करता पाया जाता है। यह समय का तकाजा माना जाता है जिसमें हर क्षेत्र और यहां तक कि प्रकृति पर्यावरण तक गंदलाता लगता है।

साहित्य के क्षेत्र में भी यह कोरोनाई प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इसीलिए दमदार साहित्य और साहित्याकार कम हुए जा रहे हैं और उनकी जगह कुकुरमुक्ताई खरपतवार बढ़ती जा रही है। पहले सारी विधाएं सशक्त थीं अब वे विदा हो गई लगती हैं और जो हैं वे भी वैसी नहीं लगतीं। सबके स्वरूप बदलकर बिगड़ैल बनते नजर आ रहे हैं।

महाराणा भूपालसिंह पीठ स्थापित करने की घोषणा

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की अकेडमिक कौन्सिल व बॉम की बैठक में 'महाराणा भूपालसिंह पीठ' स्थापित करने का निर्णय किया गया।

कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने बताया कि 21 अगस्त 1948 को विद्यापीठ के स्थापना दिवस पर संस्थापक जनार्दनराय नागर ने प्रथम दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जिसमें महाराणा भूपालसिंहजी ने दीक्षान्त अभिभाषण प्रस्तुत किया साथ ही नवीन अकादमिक गतिविधियों के शुभारंभ हेतु 15000/-रुपए की सहयोग राशि भी देने की घोषणा की। इस स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए बाद में पं. नागर द्वारा महाराणा भूपालसिंह पीठ के निर्माण की घोषणा की थी। रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच ने बताया कि नागरजी की इस घोषणा को मूर्त रूप देकर अब महाराणा भूपालसिंह की 137वीं जयन्ती पर उसे सार्थक किया जा रहा है।

समाजरत्न कर्णावटजी द्वारा काव्य-सृजन

उदयपुर (का. सं.)। यहां के समाजरत्न तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक शिरोमणि श्री लक्ष्मणसिंहजी कर्णावट और डॉ. महेन्द्र भानावत का 28 फरवरी को शब्द रंजन कार्यालय में लगभग चार घण्टा विचार-विमर्श हुआ।

मेवाड़ में मुख्यत: तेरापंथ के लिए कर्णावटजी की कई अनन्य उपलब्धियां रहीं पर लेखन के क्षेत्र में उनकी सबसे स्थायी देन तेरापंथ धर्मसंघ का इतिहास रेखांकित किये जाने योग्य है। कुल चार खण्डों में लगभग दो हजार पृष्ठों का कलेवर लिए यह इतिहास उनके द्वारा आंखन देखी कानन सुनी उपलब्धि है।

कर्णावटजी ने बताया कि नवम् आचार्य तुलसी, उनके बाद हुए आचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान आचार्य महाश्रमण का जब मेवाड़ पधारना हुआ तो हर समय वे धर्मसंघ के संयोजक के रूप में सौलह माह आचार्य प्रवर के साथ रहे और पूरे मेवाड़ के गांव-दर-गांव का स्पर्श करते अपना सम्पर्क साझा किया। महत्त्वपूर्ण जानकारियां संग्रहीत की। विशिष्ट श्रावक-श्राविकाओं द्वारा की गई तपस्याओं, धार्मिक आराधनाओं तथा संत-सतियों के चातुर्मासिक काल की विशिष्ट घटनाओं का हकीकतवार लेखाजोखा लिपिबद्ध करने का भगीरथ प्रयत्न कर अपने लेखन को सशक्त, प्रामाणिक तथा पराक्रमी बनाया।

अब गृहस्थिक दायित्वों से सर्वथा मुक्त होकर कोरोना काल में अपनी काव्यधारा को और अधिक शक्तिवंत बनाते कर्णावटजी ने मेवाड़ के इतिहास की मुख्य-प्रमुख, ख्यात-कमख्यात के साथ इतिहास के पन्नों में अज्ञात रहीं पर लोकण्ठों पर प्राणवंत बनीं घटनाओं को लेकर काव्यमय उदात्त वाणी दी है। मुख्यत: उन्हीं को ओजस्वी वातावरण देकर उन्होंने डॉ. भानावत को स्तंभित कर दिया।

डॉ. भानावत ने अपने कुछ आत्मानुभूति सुझावों से भी इस भेंट को और अधिक रोचक तथा सारवान बनाते प्रकाशन की उपयोगिता एवं आवश्यकता महसूस की।

धन्नाबाई द्वारा अरनिया में सौ चादर वितरित

उदयपुर (का. सं.)। यहां रह रहीं डॉ. महेन्द्र भानावत की भाणजी धन्नाबाई (उमराव नलवाया) ने अपनी माता सोहनबाई (98) के साथ उनके पैतृक गामड़े अरनिया जाकर 01 मार्च को वहां रह रहे प्रत्येक परिवार में सौ चादर वितरित किये।

कानोड़ से लगभग चार किलोमीटर दूर अरनिया भानावत परिवार का पिछले सवा सौ वर्षों से वणज गामड़ा रहा है। स्वयं डॉ. भानावत, उनकी माता डेलूबाई तथा बहिन सोहनबाई ने भी यहां वणज किया था। धन्नाबाई भी अपने बचपन में वहां रहीं सो यह सबका अपना गांव ही बना हुआ है। पुरानी यादें इस उम्र में ठेठ अतीत को यादकर जीवन रस ग्रहण करती हैं।

वहां की पिछली चार-पांच पीढ़ियों से नजदीकी रिश्ते ही बहुत बड़े सम्बल देते मांदगी को भी काफी हद तक कम करते वहां जाने और उनसे मिलने का उत्साह बनाये रखते हैं।

धन्नाबाई सोहनबाई की अकेली पुत्री है। उसका एक भाई पहले जन्मा पर असमय चल बसा तभी धन्नाबाई का परिवार अपने को धन्य मान उसका नाम धन्ना रख प्रसन्न हुआ। यह धन्ना धन्या ही प्रेमचन्द के गोदान की धनिया है। धन्नाबाई इससे पूर्व भी शीतकाल में अरनिया जाकर साठ कम्बलें वितरित कर आई थीं। अगली बार उनका विचार सौ साड़ियां बांटने का है। इस यात्रा में दोनों मां-बेटी ने हुरेड़ा बावजी, केरेश्वर महादेव तथा आदीश्वरजी के दर्शनों का भी लाभ लिया।

महिमा है महाशिवरात्रि की

-दिनेश सहगल-

शिवालयों से सुनाई देती घण्टों की गूँज। शिव पर जल चढ़ाने हेतु आतुर भक्तगण। श्रद्धालुओं के झुण्ड के झुण्ड जिस ओर प्रस्थान करते हैं और अनन्य भक्त शिवदर्शन की कामना रखते हैं। इस महाशिवरात्रि पर कैलाश पर तप करना है। शिव सम्पूर्ण हैं। सदा कर्मातीत हैं। सभी सिद्धियों के स्वामी हैं। वे देवों के देव हैं।

सर्वशक्तिवान शिव निराकार हैं। महाज्योति हैं। स्वयं प्रकाशवान हैं। सूक्ष्मातिसूक्ष्म हैं। इसलिए उन्हें बिन्दु स्वरूप में ही दर्शाया जाता है। उस अति सूक्ष्म बिन्दु से अनन्त शक्ति की किरणें चहूँओर फैलती हैं। शिव अजन्मा हैं। स्वयंभू हैं। उनका नाम शंकर नहीं, कल्याणकारी होने के कारण वे शिव हैं। वे ब्रह्मलोक अर्थात परमधाम के वासी हैं।

जब धर्म की ग्लानि होती है, जब चारों ओर पाप बढ़ जाता है तब वे आते हैं। वे आते हैं ज्ञान का प्रकाश देकर, सबके मन के अंधकार को हरने। उनके आने का निश्चित समय है। वे हर युग में क्यों आएँगे। हर युग में तो धर्म की हानि नहीं होती। शास्त्र के अनुसार सतयुग में धर्म के चार चरण, त्रेता में तीन, द्वापर में दो तथा कलियुग में एक चरण धर्म का होता है। कलियुग के अन्त में जब एक चरण भी दस प्रतिशत रह जाता है, तब शिव एक चरण में आते हैं।

यह कलियुग का प्रथम चरण नहीं, अंतिम चरण है। शिव का वाहन नंदी है। इसका गुह्य रहस्य है। भला बैल पर निराकार कैसे विराजमान होंगे। वे प्रजापिता बह्मा हैं जो मनुष्य-तन में प्रवेश कर अपने कार्य करते हैं। कहीं-कहीं छोटे-बड़े दो नंदी भी दिखाए जाते हैं। इसका भी रहस्य है। भक्तगण शिव मंदिरों में शिवरात्रि पर सारी रात जागरण करते हैं। वे इंतजार करते हैं कि शिव आएँगे। उन्हें दर्शन देंगे।

वे नशा भी करते रहते हैं और समझते हैं कि हम महादेव को फोलो कर रहे हैं परन्तु शायद ही किसी विरले सच्चे भक्त को उनके दर्शन होते हों। भोजन का व्रत ही पर्याप्त नहीं। एक दिन भोजन का व्रत कर लेना और पूरा वर्ष तामसिक भोजन खाना शिव को पसंद नहीं। कलियुग की इस महारात्रि में शिव स्वयं आकर मिलन मना रहे हैं। वे आह्वान कर रहे हैं। जनम-जनम तो हमने उनका आह्वान किया ही है।

शर्मा ने आबकारी आयुक्तालय में पदभार ग्रहण किया

उदयपुर (वि.)। राज्य जनसम्पर्क सेवा के 2012 बैच के अधिकारी गौरीकान्त शर्मा ने आबकारी आयुक्त कार्यालय में सहायक निदेशक जनसम्पर्क के पद पर कार्यभार ग्रहण कर लिया। श्री शर्मा भीलवाड़ा सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय से स्थानान्तरित होकर प्रतिनियुक्ति पर आये हैं। इससे पूर्व दिसम्बर 2016 से अगस्त 2019 तक वे सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, उदयपुर में उप निदेशक पद पर सेवाएं दे चुके हैं।

स्मृतियों के शिखर (119) : डॉ. महेन्द्र भानावत

तमाशा की जयपुरी रंगत के सूत्रधार ही थे गोपीजी

राजस्थान इस दृष्टि से खुशहाल प्रान्त है कि यहां लोकानुरंजन जनरंजन के अनेक विविध साधन हैं। कुछ तो इतने परिपक्व हैं कि वे एक विशिष्ट विधा के रूप में पहचान लिये हैं। एक बहुत बड़े विशाल और विस्तृत प्रान्त होने की वजह से यहां की भौगोलिक परिस्थितियां कभी एक जैसी नहीं रहीं इसीलिए विविध अंचलों के निवासी भाषा-बोली, खान-पान, रहन-सहन तथा सांस्कृतिक दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्नता लिए हैं।

यह भिन्नता मनोरंजन की दृष्टि से बड़ी दिलचस्प और रूचिकर होने के साथ अपनी रंगीनियों की खासियत लिए है। छठे दशक में भारतीय लोककला मण्डल में रहते मैंने अपने शोध का विषय इन्हीं विविधतापरक लोकनाट्यों के अध्ययन का बनाया और पूरे राजस्थान का भ्रमण कर अनेक मोतबीर कलाकारों से भेंट की।

रात-रात भर उनके प्रदर्शन देखे और अनुभव किया कि ये लोकनाट्य ख्याल-तमाशे अपने-अपने अंचल में विविध रंगत, विशिष्ट छाप, विशिष्ट अदाकारी, विशिष्ट मंच तथा स्थानीय प्रभाव के प्रतिनिधि हैं।

इनमें कुछ समय विशेष के, त्यौहार एवं पर्व-उत्सव विशेष के रूप में हैं। मंच पर प्रदर्शित होने के अतिरिक्त इनका एक रूप सवारी तथा जुलूस के साथ गांव के प्रमुख स्थलों का परिभ्रमण करते विसर्जन का है। इनके पीछे कोई विशिष्ट घटना-प्रसंग तथा आस्था-अनुष्ठान की मंगल भावना जुड़ी हुई है जो सर्व सम्मत या जाति बिरादरी तथा समाज मान्य होकर आमजन की सामूहिकता का दरसाव लिये है।

गवरी मेवाड़ अंचल के आदिवासी भील समाज का अनुष्ठानिक नृत्य है जो रक्षाबंधन के बाद ठण्डी राखी को मुहूर्त के अनुसार लगातार सवा माह तक भीली बहिन-बेटियों के गांव-गांव प्रदर्शित किया जाता है। इसकी कथा पौराणिक सन्दर्भ लिए शिव-भस्मासुर से सम्बद्ध है। यों शिव भीलों के आदिदेव महादेव हैं और पार्वती उनकी बहिन-बेटी है। गवरी नृत्य दिनभर प्रदर्शित होता है।

सवारी जुलूस के रूप में घोसुण्डा का सनकादिकों का खेल, माण्डल का शेरों का स्वांग, ब्यावर की बादशाह की सवारी के पीछे घटना विशेष का जुड़ाव रहा है। सारे नाट्य-रूप नृत्य की प्रधानता लिये हैं। सबके आंचलिक नाम भिन्न-भिन्न हैं। स्वांग प्रस्तुति की अवधि अधिक नहीं होती। रात-रात भर चलने वाले ख्याल-तमाशे होते हैं। पौराणिक आख्यानों से सम्बन्धित पात्रों पर जो प्रस्तुतियां होती हैं वे लीला-रूप हैं जैसे रामलीला, कृष्णलीला। इनमें महिला पात्रों की भूमिका भी पुरुष पात्र ही महिला-किरदार में निभाते हैं।

राजस्थान में आंचलिक रंगतपरक ख्याल-तमाशों में करौली के ख्याल, किशनगढ़ी रंगत, शेखावाटी रंगत, हाड़ौती, मेवाड़, मारवाड़ के ख्याल प्रसिद्धि लिये रहे। बीकानेर-जैसलमेर की ओर रम्मत के ख्यालों ने बड़ा नाम कमाया।

इस दृष्टि से जयपुर में तमाशा ख्यालों का आयोजन महाराजा माधवसिंह के समय हुआ। इनके दरबार में तब बंशीधर भट्ट नामक एक गायक कलाकार थे जो महाराष्ट्र के थे। वे वहां प्रचलित तमाशा ख्याल शैली के सिद्ध कलाकार थे। जयपुर में महाराजा ने इन्हें प्रश्रय देकर ब्रह्मपुरी में बसाया। तब महाराजकुमार रामसिंह (द्वितीय) मात्र बारह वर्ष की उम्र लिये थे। उन्हें इस कला में बड़ी रूचि थी।

लोकनाट्यों के अध्ययन के दौरान मैंने जयपुरी रंगत के ख्यालों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने 10 मई 1966 को ब्रह्मपुरी स्थित उस्ताद गोपीकृष्णजी भट्ट से उनके अखाड़े पर भेंट की। उन्होंने बड़ी आत्मीयता से तीन-चार घण्टों के दौरान मुझे तमाशा उर्फ जयपुरी रंग के ख्यालों की परम्परा विषयक विपुल जानकारी से समृद्ध किया।

गोपीजी ने बताया कि उनसे पूर्व बंशीधरजी असाधारण व्यक्तित्व के बड़े सधे हुए कलाकार एवं आशु रचनाकार थे। वे जितना अच्छा गला रखते उतने ही अच्छे नृत्यकार तथा राग-रागनियों में पारंगत थे। उन्होंने अपनी मण्डली तैयार की और वे अपने ही द्वारा लिखित ख्यालों का प्रदर्शन करते थे। इस दौरान उन्होंने मुझे अपने पास सुरक्षित ख्यालों की एक हस्तलिखित प्रति भी बताई जिसमें जोगी रांझा हीर, गोपीचन्द भरथरी, रूपचन्द गांधी, मियां जुठून तथा छैल पणिहारी ख्याल संग्रहीत थे।

इस हस्तलिखित प्रति का लिपिकाल संवत् 1964 था। मियां जुठून के तमाशे के अन्त में उसका रचनाकाल आसोज सुद 15 संवत् 1956 दिया हुआ था। ख्यालों में देशी कालिंगड़ा, विहाग, मालकोश, चलत, कालिंगड़ा, सोहनी, सिन्ध काफी, काफी, सोरठ, भैरवी जैसी रागों का उल्लेख था।

गोपीजी ने बड़े इत्मीनान से विविध ख्यालों में सम्मिलित रागों के नमूनों की साभिनय प्रस्तुति के साथ बताया कि राग-रागिनियों की ही प्रधानता के कारण जनता रात-रात भर रस विभोर हो देखती रहती है। ख्यालों की कथा तो अमूमन सभी दर्शकों को याद रहती है पर जो कलाकार जितना होशियार गायक नर्तक तथा मजमेबाज होगा वही ज्यादा लोकप्रियता ग्रहण करेगा।

गोपीजी ने बताया कि बंशीधरजी के बाद उनके पुत्र ब्रजपालजी हुए। वे लालाजी नाम से ही अधिक जाने गये। ब्रजपालजी के फूलजी और मन्नूजी हुए। दोनों भाई होनहार कलाकार थे। उन्होंने तमाशा कला को आगे ही नहीं बढ़ाया, उसे परवान चढ़ाया और बड़ा नाम कमाया। दोनों ब्रह्मपुरी के छोटे और बड़े अखाड़े के उस्ताद के रूप में अपने-अपने अखाड़े में कलाकारों को तामिल देते। शास्त्रीय राग-रागिनियों की बंदिशों को वे जब अपनी मधुर गायकी देते तो दूर-दूर तक उनकी आवाज गूंजती हुई शकुन देती लगती।

फूलजी के ये ही गोपजी हुए। ये लगभग 10 वर्ष तक अपने पिताश्री के सान्निध्य में गाने-बजाने की कला में पारंगत हो रहे थे कि फूलजी का साया उठ गया। इससे काका मन्नूजी पर न केवल पारिवारिक दायित्व की जिम्मेदारी आई बल्कि तमाशा को भी बड़ा धक्का लगा।

गोपीजी बताते हैं कि काकाजी ने बड़ी हिम्मत और हौंसले के साथ मुझे इस अपूरणीय क्षति से उबारते हुए सम्बल ही नहीं दिया अपितु एक होनहार कलाकार के रूप में भी मुझे तैयार कर तमाशा को जीवन्त किया। तब से लेकर अब तक मैं तमाशा के ही हवाले हो गया हूं। रात-दिन तमाशे का ही सपना लिए जहां अपने पुरखों की बख्शी इस कला-धरोहर को सम्भाले हुए हूं यहां नये-नये कलाकारों को भी उसी तरह से तैयार कर रहा हूं जैसी मेहनत काकाजी मन्नूजी ने मुझे बनाने में की थी।

गोपीजी के अनुसार प्रारम्भ में तो तमाशा में शास्त्रीय पुट की ही प्रधानता थी पर धीरे-धीरे लोकपक्ष की सहज राग-रागिनियां, भाव-भंगिमा तथा जमीन पर बिछात बिछा ऊपर शामियाना तान दर्शकों के साथ प्रस्तुति देने की कला से इसकी लोकप्रियता में खासा बढ़ोतरी हुई। वाद्यवादन में नगाड़ों का प्रयोग नहीं कर गायकी की बुलन्दगी पर विशेष जोर दिया जाता है।

तमाशा की दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ोतरी और लोकप्रियता पर गोपीजी अत्यन्त खुशमिजाज लग रहे थे। ऐसी स्थिति में मैंने यह उचित समझा कि वे किसी अति प्रचलित ख्याल का कोई टुकड़ा गाकर अभिनय के साथ उसकी प्रस्तुति से अवगत कराएं ताकि मैं भी अपना आत्मरंजन कर सकूं। उन्होंने बड़े स्नेहभाव से मुझे अपने अखाड़े में ले जाकर सम्मानजनक आसन दिया और छैल पणिहारी का प्रारम्भिक अंश प्रस्तुत किया जो इस प्रकार था-

सुन री नाजुकड़ी पणिहार, तेरे सिर सोने की झारी।
ओढ़े कसुमल नई ओढ़नी, घूंघट ओट सम्हारी।।
नैनों की बरछी कर तरछी, वेद रही होय मारी।
जुल्फें सुधारी पाटी पाड़ी, मोतीयन मांग संवारी।।
मतवारी नागिन सी कारी, आरी पीछे डारी।
नैनां अंजन दांतों मिस्सी, मुख में पान सुपारी।।
गले हार पचमनिया सोहे, हसन दसन दुतिकारी।
रति रंगा बलिहारी प्यारी, झांकी ऊपर वारी।।
जबसे प्यारी तुझे निहारी, उतकंठा चितधारी।
खानपान सोना सब छोड़ा, जान-जान पर हारी।।

इससे रचनाकार बंशीधरजी भट्ट की रचना-क्षमता और वर्णन शैली की सौंदर्यप्रिय प्रवीण पटुता और विषय प्रतिपादन की सूक्ष्म तथा पैनी दृष्टि सम्पन्नता का परिचय तो मिलता ही है साथ ही पणिहारी की छैलछैबीली आलंकारिक भाव-भंगिमा की सुदर्शनी सम्मोहक छवि को जब कोई सधा हुआ दक्ष कलाकार महिला रूपीणी अदाकारी में उसके प्रत्येक अंग-रंग की प्रस्तुति देता पाया जाता है तो धरती और आकाश की सारी आँखें अठखेलियों में भर जाती हैं। मेरे जीवन का वह समय आज भी मुझे स्वप्निल सा सुख देते लगता है जैसे गोपीजी ने अनेक रंगों का ज्योति-कलश ही मेरे समक्ष छलका दिया है।

तमाशा खेलों को लगभग सात-साढ़ा सात दशक तक गोपीजी ने एकछत्र बादशाहत के साथ जीते हुए अनेक उपलब्धियों के तमगे दिये। बदले समय में जहां जनरंजन के अनेक और साधन आ गये तब भी गोपीजी ने अपने समय में उसकी चमक बखूबी चमकाये रखी।

उनके बाद भी लोग भूले नहीं हैं जब होली पर जोगी जोगन का तमाशा गुलाबी रंग-रंजन देता तो दूसरे दिन ही कोई होशियार कलाकार हीर रांझा के अमरप्रेम की डोरी में प्रेमरस द्वारा प्रेमियों को एक सूत्र में आबद्ध कर देता।

चैती अमावस्या को गोपीचन्द भरथरी और शीतला अष्टमी को जुठून मियां की खिलखिलाहट लोकमन को तर कर शीतल बयार देती। ऐसे ब्रह्मपुरी के छोटे-बड़े अखाड़ों के अलावा कभी आमेर के अम्बिकेश्वर मन्दिर में तो कभी बारह भाइयों के चौक में तो कभी चौड़े रास्ते ताड़केश्वर महादेव के पास तमाशों की बहार छाई रहती। हर समय दर्शकों की ठसाठस उपस्थिति तमाशे के रंग को और गहरा सवाया कर देती।

खुले आकाश के नीचे, खुले वातावरण में, रात को सन्नाटे को तोड़ती नृत्य, संगीत तथा वादन की त्रिवेणी तमाशे को जो ऊंचाई देती, कलाकार भूल बैठते कि कैसे रातवेला धीरे-धीरे खिसकती प्रातर्वेला तक पहुंच गई है तब भी दर्शक मंत्रमुग्ध बैठे, उठने का नाम नहीं ले रहे हैं।

सच है, सबसे बड़ा बलवान समय होता है जो सदैव ही परिवर्तित होता रूकने का नाम नहीं लेता। वे सारी विधाएं जो जन-मन-रंजन का सशक्त माध्यम रहीं अब रेत की तरह धीरे-धीरे फिसलती ओझल होती जा रही हैं।

ऐसे में न वे गोपीजी रहे, न वैसे उस्ताद और न वैसे अखाड़े ही रहे। केवल बची हैं तो वे सब यादें जिन्हें बटोर हम बांधना चाहते हैं गातों में, भींतों में या किन्हीं सरवर समुद्र की पालों में पर अपनी मुट्ठी में समय कब और कितने समय तक किसी को कैद रख पाता है?

साहित्य का फैसला तो काल करता है

-श्रीकृष्ण शर्मा-

नन्द चतुर्वेदी सब ओर 'नन्द बाबू' के नाम से पहचाने जाते रहे। वे जब कभी जयपुर प्रवास पर होते, ताराप्रकाश जोशी के यहां उनका सायंकालीन भोज का आयोजन होता ही होता। उनके साथ अक्सर मैं भी होता। एकबार भोजन के बाद नन्द बाबू बोले, पान लबों की शान है। भोजन के बाद पान का आस्वाद न लिया जाए तो संतुष्टि नहीं होती। मैं बोला, ये कौनसी बड़ी बात है। हम तीनों जनता स्टोर की ओर चल पड़े। पान वाला पान लगा रहा था तभी नन्द बाबू बोले, तारा बाबू! तुम तो हाकिम कवि हो पर साहित्य में तुम्हारा क्या योगदान है? अप्रत्याशित रूप से जोशी पर यह हमला था। वे बोले, साहित्य का फैसला समय और काल करता है। मैं या तुम नहीं। मैं चालीस साल से कविता कर रहा हूं। मेरे कई गीत, लोकगीत का दर्जा प्राप्त हैं। एक गीत है-

मेरा वेतन ऐसे रानी, जैसे गरम तवे पर पानी।
एक कसेली कैंटीन से, थकान उदासी का नाता है।
वेतन के दिन सा निश्चित ही पहला बिल उसका आता है।।
हर उधार की रीति उम्र सी, जो पाई है, सो लौटानी।
मेरा वेतन ऐसे रानी, जैसे गरम तवे पर पानी।।

नन्द बाबू बोले, बस, यही एक गीत तो तुम्हारी कुल पूंजी है। प्रत्युत्तर में जोशी ने दूसरा गीत सुनाया-

तन तो ब्याह दिया बाबुल ने, मन का परिणय नहीं हुआ।
पूरे आत्म समर्पण वाला, मन से अभिनय नहीं हुआ।।

और सुनो-

तेरे मेरे बीच कहीं है, एक घृणामय भाईचारा।
सम्बन्धों के महासमर में, तू भी हारा मैं भी हारा।।

मुझे भी जोशी का एक गीत याद आया-

मेरे पांव तुम्हारी गति हो, फिर चाहे जो भी परिणति हो।

नन्द बाबू चुप रहे। बोलते भी क्या। एक सन्नाटे सी उदासी लिए हम तीनों वहां से चल पड़े।

5जी से युक्त ओपो एफ19 प्रो सीरिज लॉन्च

उदयपुर (वि.)। ओपो ने भारत में एफ19 प्रो + 5जी और एफ19 प्रो स्मार्टफोन लॉन्च किया है। एफ 19 प्रो सीरीज के साथ ओपो ने शिक ओपो बैण्ड स्टाइल का भी अनावरण किया।

दमयन्तसिंह खानोरिया, चीफ़ मार्केटिंग ऑफिसर, मोबाइल्स प्रा. लि. ने कहा कि एफ19 प्रो + 5जी स्मार्टफोन 48 मेगापिक्सल क्वैड कैमरा, 8 मेगापिक्सल वाईड एंगल कैमरा, 2 मेगापिक्सल पोर्टेट मोनो कैमरा और 2 मेगापिक्सल मैक्रो मोनो कैमरा के साथ आता है। ओपो एफ19 प्रो ड्यूल व्यू वीडियो और फोटोग्राफी फीचर्स जैसे एआई स्क्रीन एन्हान्समेन्ट, 2.0 डायनामिक बोकेह, नाईट फ्लेयर पोर्टेट, एआई कलर पोर्टेट और एआई ब्यूटीफिकेशन 2.0 के साथ आता है। मात्र 173 ग्राम वज़न और 7.8 एमएम अल्ट्रा स्लिम बॉडी के साथ एफ19 प्रो में 48 मेगापिक्सल का क्वैड कैमरा है। यह फ्लूड ब्लैक और क्रिस्टल सिल्वर रंग में उपलब्ध है। ओपो का आधुनिक तकनीक से युक्त प्रीमियम वियरेबल ओपो बैण्ड स्टाइल नींद और रनिंग के दौरान ब्रीदिंग क्वालिटी असेसमेन्ट प्रदान करता है। यह 12 वर्कआउट मोड्स और अन्य सुविधाजनक फीचर्स के साथ आता है जो बेसिक स्पोर्ट वर्ज़न और स्टाइल वर्ज़न में उपलब्ध है।

पत्रकार हितों के लिए जार प्रतिबद्ध : हरिबल्लभ मेघवाल

उदयपुर (का. सं.)। जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के प्रदेशाध्यक्ष हरिबल्लभ मेघवाल एवं प्रदेश सलाहकार श्रीलाल जोशी अल्प प्रवास पर 5 मार्च को उदयपुर आये। उन्होंने चेतक सर्कल स्थित कार्यालय में जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत से भेंट कर प्रदेश में पत्रकारों के समक्ष आ रही समस्याओं पर चर्चा की। प्रदेशाध्यक्ष ने जार उदयपुर द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश संगठन हर कदम पर उनके साथ है। राज्य सरकार

प्रदत्त पत्रकार उपयोगी परिलाभों एवं पत्रकार सुरक्षा कानून के लिए संगठन प्रतिबद्ध है। इसके लिए लगातार प्रयास जारी हैं।

इस अवसर पर हरिबल्लभ मेघवाल एवं श्रीलाल जोशी का पगड़ी, शॉल, उपरना ओढ़ाकर डॉ. तुक्तक भानावत महासचिव अजयकुमार आचार्य, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं उपाध्यक्ष भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, कोषाध्यक्ष अल्पेश लोढ़ा ने स्वागत किया।

गर्भावस्था के शुरुवाती नुकसान के बाद भी मातृत्व सुख मिला

उदयपुर (वि.)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने बार-बार गर्भपात से परेशान विवाहिता को अत्याधुनिक तकनीक से मातृत्व सुख प्रदान किया है।

स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. शीतल कौशिक ने बताया कि उदयपुर निवासी (फातिमा) परिवर्तित नाम का पूर्व में दो बार 3-4 महिने में गर्भपात हो गया। विवाहिता ने पारस जे. के. हॉस्पिटल में परामर्श लिया। जांच में पता चला कि बच्चेदानी के मसल्स कमजोर होने के कारण गर्भ 9 माह तक नहीं ठहर रहा है। उसका उपचार प्रारम्भ कर दवाओं से गर्भधारण करवाया। बच्चेदानी के मुंह पर अत्याधुनिक तकनीक द्वारा स्टीचिंग की। इससे गर्भ रुकने लगा। मरीज को बेड रेस्ट की सलाह दी और दवाओं के सहारे 6 माह तक बच्चे को गर्भाशय में रखा।

बाद में बिना ऑपरेशन के सुरक्षित डिलीवरी करवा दी लेकिन बच्चा 6 माह का होने के कारण पूर्ण रुप से विकसित नहीं हो पाया था इसलिए उसे अस्पताल की नवजात इकाई में नवजात एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. राजकुमार व टीम की देखरेख में 45 दिन तक विश्वस्तरीय नर्सरी में कंगारु केयर से रख पूर्ण स्वस्थ होने पर डिस्चार्ज किया। अब बच्चा पूर्ण रुप से स्वस्थ है और उसका वजन भी 2 किलोग्राम है।

भूपेश दाधीच को पितृशोक

उदयपुर (वि.)। वरिष्ठ पत्रकार भूपेश दाधीच के पिता डॉ.

उमाशंकर शास्त्री का 13 मार्च को हृदयगति रूकने से 98 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। वे अपने पीछे पुत्र तरूण, राजेश, गगनबिहारी, युगलबिहारी, भूपेश, मनीष, दो पुत्रियों माधवी व दक्षा के साथ पौत्र दीपक, दिवाकर, मयंक, अणु, ऋत्विक, डॉ. दिनकर, भुवन, मोहित, रूद्राक्ष, प्रपौत्र तन्मय तथा अन्मय का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

फील्ड क्लब में कृष्णावत उपाध्यक्ष, भालमवाला ट्रेजरार बने

उदयपुर (वि.)। फील्ड क्लब के 9 मार्च को सम्पन्न हुए चुनाव में उपाध्यक्ष पद पर मनवीरसिंह कृष्णावत तथा ट्रेजरार पर अब्बासअली भालमवाला निर्वाचित हुए। सचिव डॉ. अनुज शर्मा पहले ही निर्विरोध निर्वाचित हो गए थे। कृष्णावत को 998 तो भालमवाला को 978 मत मिले। जीतने वाले पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष मनवीरसिंह कृष्णावत,

सचिव डॉ. अनुज शर्मा, ट्रेजरार अब्बासअली भालमवाला सदस्यों में गौरव सिंघवी, जिम्मी छाबड़ा, ललित चोरड़िया, मयंकसिंह पंवार, प्रशांत बाजपेयी, सुरेन्द्रसिंह खनुजा तथा विशाल लुथरा शामिल हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भव्य आयोजन

उदयपुर (वि.)। आईएनआईएफडी की ओर से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर वूमन अचीवर्स 2021 का आयोजन भैरवबाग में किया गया। सहप्रायोजक जैन सोश्यल ग्रुप समता, आरबीएस फाउंडेशन एवं सृजन इंटरनेशनल स्कूल ऑफ फाइनेंस थे। कार्यक्रम में वन टू ऑल, सन कॉलेज, सृष्टि क्रियेशन एवं पार्श्वकल्ला पब्लिक रिलेशंस का भी सहयोग रहा। शुभारम्भ मुख्य अतिथि उदयपुर टेल्स की सुष्मिता सिंघा, विशिष्ट अतिथि डॉ. आनंद गुप्ता, अरूण मांडोत, मनीष कपूर, डॉ. सुभाष कोठारी एवं सुरेश शर्मा ने दीप प्रज्वलन कर किया।

सुखाड़िया विवि द्वारा महिला दिवस पर कुलपति डॉ. अमेरिका सिंह से सम्मानित होती डॉ. शकुंतला पंवार

अल्पेश लोढ़ा एवं प्राची मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया। स्वागत भाषण डॉ. सुभाष कोठारी ने दिया। कार्यक्रम में डॉ. कल्पना शर्मा, श्रीमती भारती राज, अंजली दुबे, डॉ. सोनिया गुप्ता, सुरभि खत्री, डॉ. आभा गुप्ता, सुलोचना जैन, सरिता कपूर, सोनल शर्मा, नेहा कुमावत, गुनीत मोंगा भार्गव, स्वाति लोढ़ा, रिद्धिमा खमेसरा, भुवनेश्वरी शक्तावत, हरनीत कौर, ममता कपूर, डॉ. दिव्यानी कटारा, शिल्पा चुघ को सम्मानित किया गया। इस दौरान यंग इंटरप्रेन्योर अवार्ड प्रियंका अर्जुन, इमर्जिंग टेलेंट ऑफ राजस्थान हिमानी बैरवा, बिजनेस वूमन ऑफ द इयर पल्लवी बड़जातिया तथा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड राजेश्वरी नरेन्द्रन को प्रदान किया गया। पार्श्व कलाकार मुरली, हिमानी बैरवा तथा म्युजिक बैंड ने रंगारंग प्रस्तुति दी। धन्यवाद अरूण मांडोत ने तथा संचालन श्रीमती रागिनी शर्मा ने किया।

स्लाइस का कैटरीना कैफ के साथ नया ब्रैंड कैंपेन लॉन्च

उदयपुर (वि.)। गर्मियों में मजबूत शुरुआत करते हुए स्लाइस अपने ग्राहकों को सबसे थिक सबसे टेस्टी चैलेंज लेने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। ब्रैंड भारत के सबसे गाढ़े और स्वादिष्ट मैंगो ड्रिंक के तौर पर अपनी स्थिति को और मजबूत बना रहा है। नीलसन द्वारा की गई स्वतंत्र रिसर्च ने भी इस दावे की पुष्टि की है। रिसर्च में की गई ब्लाइंड टेस्टिंग में देश के सभी प्रमुख मैंगो ड्रिंक्स के बीच स्लाइस ने सबसे गाढ़े और स्वादिष्ट मैंगो ड्रिंक का दर्जा हासिल किया है। इसके मद्देनजर, ब्रैंड ने इस सीजन में अपना 'सबसे थिक सबसे टेस्टी' कैंपेन लॉन्च किया है। ब्रैंड के नए मजेदार टीवीसी में लोकप्रिय अभिनेत्री और स्लाइस की ब्रैंड एंबेसडर कैटरीना कैफ दिखाई देंगी।

नया टीवीसी समुद्र तट के खूबसूरत माहौल में फिल्माई गया है। टीवीसी में ब्रैंड एंबेसडर कैटरीना कैफ प्रशंसक को टेस्ट चैलेंज देती हैं और इस दावे को पुख्ता करती है कि स्लाइस ही भारत का सबसे स्वादिष्ट मैंगो ड्रिंक है। कैटरीना द्वारा पेश किया गया ब्लाइंड टेस्ट चैलेंज प्रशंसक को स्लाइस और आम के स्वाद वाले दूसरे ड्रिंक के बीच चुनाव करने का आग्रह करता है।

50,000 से ज्यादा ऑफलाइन रिटेलर्स और पड़ोसी स्टोर्स अब अमेज़न पर लोकल शॉप्स का हिस्सा

उदयपुर (वि.)। ओग्गो इंटरप्राइजेज के मालिक संदीप शाह तीन दशकों से मुलुंड, मुंबई में अपनी शॉप से कस्टमर्स को होम और किचन प्रोडक्ट बेच रहे हैं। पिछले साल चुनौतीपूर्ण समय में उन्होंने अपने बिजनेस को अमेज़न के लोकल शॉप्स प्रोग्राम के साथ ऑनलाइन किया और प्रोग्राम में शामिल होने के तीन महीनों के भीतर अमेज़न पर 800 से ज्यादा ऑर्डर पूरे किए।

मनीष तिवारी, वीपी अमेज़न इंडिया ने कहा कि संदीप शाह उन 50,000 से ज्यादा ऑफलाइन रिटेलर्स और पड़ोस की दुकानों में से एक है, जो 'अमेज़न लोकल शॉप्स' प्रोग्राम पर है। अप्रैल 2020 में शुरू किया गया यह प्रोग्राम ई-कॉमर्स के फायदों को ऑफलाइन रिटेलर्स और पड़ोस के स्टोर्स में लाता है। यह अमेजन डॉट इन पर डिजिटल उपस्थिति के साथ उनके स्टोर पर मौजूदा फुटफॉल्स को पूरा करने में मदद करता है और उनकी पहुंच का विस्तार करता है। यह स्थानीय व्यवसायों को ऑनलाइन आने, टेक्नोलॉजी को अपनाने और ई कॉमर्स से लाभ उठाने में सक्षम बनाता है।

डॉ. कमलेश शर्मा राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता में प्रथम

डॉ. कमलेश का माही महोत्सव के दौरान माही की लहरों पर नौका दौड़ाती नारी शक्ति फोटो प्रथम पुरस्कृत

उदयपुर (वि.)। पृथ्वीराज फाउंडेशन, अजमेर द्वारा आयोजित रूपेश डूडी मेमोरियल परिपक्व फोटो प्रतियोगिता में वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफर और उदयपुर के जनसंपर्क उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा प्रथम स्थान पर रहे। द्वितीय-तृतीय शैलेश पटेल तथा आनंद पटेल रहे। इसमें देशभर से 80 फोटोग्राफर्स की 240 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। अजमेर के डीएवी कॉलेज में डॉ. कमलेश को 10 हजार, शैलेष को 5 तथा आनंद को 3 हजार रुपये का चैक, प्रशस्तिपत्र एवं 25 सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों के विजेताओं को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

मेवाड़ी गीतों के ग्रामोफोन रिकार्ड

– डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

बहुत दिनों से सोचा था कि मेवाड़ी ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स के बारे में कुछ लिखा जाए। बहुत कम ही लोगों को पता होगा कि मारवाड़ी रिकॉर्डिंग कंपनी की तरह मेवाड़ी लोकगीतों, विशेषकर रजवाड़ी गीतों पर भी रिकार्ड जारी हुए थे।

यह कार्य उदयपुर कं अन्तिम महाराणा महाराज प्रमुख भूपालसिंह के संरक्षण में करवाया गया और निर्माण का दायित्व मुम्बई की नेशनल ग्रामोफोन रिकॉर्ड कम्पनी ने उठाया। इसके विपणन का काम भटनागर ब्रदर्स, उदयपुर को सौंपा गया।

भूपेन्द्र मल्हारा

संयोग की बात है कि मेवाड़ी रिकार्डिंग कम्पनी ने अपना पहचान-चिन्ह चित्तौड़ के किले को बनाया, बिल्कुल वैसा ही जैसा दोस्ती लन्दन का सिक्का था। नीचे द्रोण पर्वत उठाए हनुमान को वृत्त में स्फुटित किया गया। मेवाड़ की यह बड़ी पहचान थी। सेमल आलता के रंग जैसा मुद्रण किया गया था। कुल 78 आरपीएम के रिकार्ड बने लेकिन ज्यादा लोकप्रिय नहीं हुए। कोई पन्द्रह रिकॉर्ड्स मेरे देखने में आए। चूड़ीबाजे पर चलाकर ही इन तवों को सुना जा सकता था।

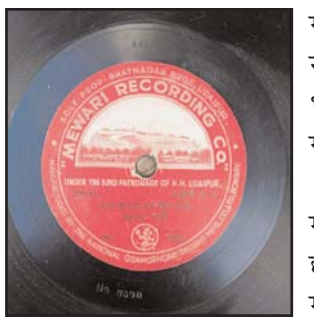

इसलिए उदयपुर के रजवाड़ी गीतों को चुनकर उस दौर के दरबारी कलाकारों को रिकॉर्डिंग के लिए गाने का अभ्यास करवाया गया। समूह में गानेवालों को उदयपुरपार्टी के नाम से जाना गया और एकल गायिकाएं रही थीं लछुबाई और फत्तीबाई। रिकॉर्ड्स पर मिसेज फत्ती नाम दिया गया है।

डॉ. महेन्द्र भानावत जी कहते हैं कि बाद में उनके सैंकड़ों मेवाड़ी लोकगीतों की रिकॉर्डिंग आकाशवाणी और भारतीय लोककला मण्डल में भी हुईं। बरसों तक उनका प्रसारण हुआ। पहलीबार जब जयपुर में आकाशवाणी केन्द्र खुला तो इन गायिकाओं में नारायणीदेवी, रतनप्रभा, जानकीदेवी को भेज उनका प्रसारण किया गया।

इन गायिकाओं ने मेवाड़ी मांड गीतों के साथ ही महारानी के रचे हुए मेवाड़ी गीतों को भी स्वर दिया। प्रजापाल पृथ्वीपाल..., जग के पालनहार... जैसे रिकॉर्ड से ज्ञात होता है कि वे नवीन रचनाएं थीं। राणाजी म्हें तो कईय न मांगू, पिछोला रो पाणी मांगू, उदियापुर रो वास मांगू... ऐसा गीत था जिसको बाद में लता मंगेश्कर ने भी गाया।

मेरे आग्रह पर भाई श्री भूपेंद्रजी मल्हारा ने अपना दुर्लभ खजाना टटोला और इन रिकॉर्ड्स के चित्र भेजे तो मन हुआ कि लोक भाषाओं के उस दौर को भी याद किया जाए, जब वे जबां और रिकॉर्ड पर होती थीं...। श्री मल्हारा पिछले तीन दशकों से ऐसी अलभ्य चीजों के संरक्षण में लगे हुए हैं।

जार के प्रांतीय सम्मेलन में भागीदारी

जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) द्वारा 07 मार्च को भीलवाड़ा के कोटड़ी में आयोजित हुए प्रांतीय सम्मेलन में उदयपुर से महासचिव अजयकुमार आचार्य, कार्यकारिणी सदस्य राजेंद्र हिलोरिया तथा उपाध्यक्ष भूपेंद्रकुमार चौबीसा ने भाग लिया। सम्मेलन में पत्रकार सुरक्षा कानून एवं पत्रकारों की समस्याओं पर मंथन हुआ।

शुभ विवाह

27 फरवरी को उदयपुर में प्रख्यात शायर डॉ. इक़बाल सागर की सुपौत्री एवं अनवर इक़बाल की पुत्री कायनात का शुभ विवाह वक़ार माजिद के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। शब्द रंजन की बधाई।

'पेनियरबाय' से जिंदगी बदली

भीलवाड़ा (वि.)। लॉकडाउन में कई लोगों को वित्तीय परेशानियां हुई। नौकरियां मुश्किल में पड़ गयीं। छोटे व्यापारी की दुकानें बंद हो गईं। इससे आम रिटेलर्स को भी नुकसान उठाना पड़ा लेकिन जो रिटेलर्स पेनियरबाय के साथ वित्तीय सेवा दे रहे थे, उनकी स्थिति अन्यों से बेहतर रही। पेनियरबाय एक ऐसा एप है जिससे पैसे भेजने और निकालने, आधार बैंकिंग, बिल भुगतान, मोबाइल रिचार्ज, डिजिटल पेमेंट और इंश्योरेंस जैसी सारी सुविधाएं लोगों तक पहुँचाई जा सकती है। आज देशभर में 15 लाख से भी ज्यादा रिटेलर्स पेनियरबाय के साथ जुड़कर 15 करोड़ ग्राहकों को सेवा दे रहे हैं।

भीलवाड़ा के मनोज पारीक पेनियरबाय के साथ 2018 से जुड़े और एक रिटेलर के तौर पर शुरुआत करते हुए तीन सालों में सुपर डिस्ट्रीब्यूटर बन गए हैं। अन्य गाँवों की तरह, भीलवाड़ा में भी सीमित बैंक शाखाएं और सीमित एटीएम होने से बैंकिंग सेवाओं के लिए लोगों को लम्बा सफ़र तय करना पड़ता था। मनोज को इस समस्या का हल पेनियरबाय एप में बड़ी आसानी से मिल गया। अपनी दुकान, एमएनसी केयर पर मनोज पेनियरबाय की मदद से भीलवाड़ा के लोगों तक आसान कैश विथड्रॉवल, कैश डिपॉज़िट, बचत खाता और इंश्योरेंस जैसी सेवाएं उपलब्ध करवाने लगे।

कोविड टीका लगवायेगा एचडीएफसी बैंक

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक ने घोषणा की कि वह अपने एक लाख से अधिक कर्मचारियों और उनके आश्रित परिवार के सदस्यों को कोरोनो वायरस से प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करने के लिए टीकाकरण का खर्च वहन करेगा। बैंक दो अनिवार्य वैक्सीनेशन के लिए आने वाली लागत राशि की प्रतिपूर्ति करेगा। विनय राजदान, समूह प्रमुख-एचआर, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि हमने लगातार इस पूरे दौर में अपने कार्यालयों और बैंक शाखाओं में अपने कर्मचारियों और ग्राहकों के लिए एक सुरक्षित कार्य वातावरण सुनिश्चित करने के लिए सभी सरकारी अनिवार्य दिशानिर्देशों का पालन किया है। हमारे कर्मचारियों ने लाखों ग्राहकों की सेवा करने के लिए अनुकरणीय दृढ़ता, व्यावसायिकता और समर्पण दिखाया है। कर्मचारियों और उनके आश्रित परिवार के सदस्यों के लिए टीकाकरण की लागत को वहन करना कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए संगठन की ओर से एक छोटा सा प्रयास है।

विशिष्टजनों के लगा कोरोना टीका

1

2

3

4

कोरोना का टीका लगवाते क्रमश: सुखाड़िया विवि के कुलपति प्रो. अमेरिकासिंह, लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत, एमबी चिकित्सालय के उप अधीक्षक डॉ. रमेश शर्मा की 98 वर्षीय माता रूपाबाई जोशी तथा जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत।

मोदी सरकार के खिलाफ जारी रहेगा संघर्ष : डॉ. रेड्डी

उदयपुर (का. सं.)। मोदी सरकार द्वारा उत्पादन करने वाले देश के मजदूर और किसानों का फायदा पूंजीपतियों को पहुंचाने के लिए कानूनों में परिवर्तन कर मजदूर और किसान को गुलाम बनाने की साजिश रची गई है जिसे सफल नहीं होने दिया जाएगा। इसके खिलाफ शीघ्र ही देशभर के किसान और मजदूर एक मंच पर आकर प्रदर्शन करेंगे। देश की सभी 12 यूनियनों ने बातचीत के बाद सेंट्रल ट्रेड यूनियन कोर्डिनेशन कमेटी के बैनर तले यह फैसला किया है कि देशभर में विरोध-प्रदर्शन किए जाएंगे। विरोध प्रदर्शनों में बीएमएस भी शमिल होगा।

यह बात इंटक के राष्ट्रीय अध्यक्ष, कांग्रेस पार्टी के सीडब्ल्यूसी मेम्बर, पूर्व सांसद केन्द्रीय श्रम संगठनों के संयोजक तथा विश्व श्रम संगठन इंटरनेशनल कन्फडेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (आईसीएफटीयू) के उपाध्यक्ष डॉ. जी. संजीव रेड्डी ने प्रेसवार्ता में कही। इस अवसर पर राजस्थान इंटक के प्रदेशाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली, यूथ इंटक के प्रदेशाध्यक्ष नारायण गुर्जर, प्रदेश तथा महिला इंटक की प्रदेशाध्यक्ष चंदा सुहालका भी उपस्थित थे।

डॉ. रेड्डी ने कहा कि पहले श्रम कानूनों में परिवर्तन कर मजदूर के हक की लड़ाई लड़ने वाले हड़ताल जैसे हथियार को छीना गया। किसानों की जमीन को कोर्पोरेट एवं पूंजीपतियों को लीज पर देने तथा न्यूनतम मूल्य, खरीद एवं मंडियों को समाप्त कर जमाखोरी और कालाबाजारी बढ़ानेवाले नियम के खिलाफ कोषाध्यक्ष ख्यालीलाल मालवीय, इंटक के वरिष्ठ नेता सतीश व्यास, एस. एम. अय्यर 100 से अधिक दिनों से अन्नदाता संघर्ष कर रहा है। उनकी अनसुनी कर तथाकथित राष्ट्रवादी सरकार किसान, मजदूर विरोधी कानून लाने में व्यस्त है। उसे यह समझना होगा कि पूंजीपतियों की पूंजी से देश की जीडीपी नहीं बढ़ती। मजदूर और किसान का परिश्रम एवं पसीना साथ होने पर ही देश की समृद्धि है और उन्हीं से हमारे खजाने में धन सम्पदा की वृद्धि होती है।

प्रदेशाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली ने कहा कि कोरोना काल में सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए हमने 21 हजार मास्क वितरित किये गये। मुख्यमंत्री सहायता कोष में 6.40 लाख रूपये दिये गये। चार फ्री मेडिकल कैंप लगाकर निशुल्क दवाइयां वितरित की गई। 12 लाख निर्माण श्रमिकों को प्रदेश के बीओसीडब्ल्यूसी बोर्ड के माध्यम से 3500 रूपये की सहायता प्रत्येक श्रमिक को दिलाई गई। उन्होंने सरकार से मांग की कि महंगाई को देखते हुए न्यूनतम मजदूरी 500 रूपये प्रतिदिन की जाय।

जनम भौम की ओपमा

सर्व ओपमा जनम भौम की नहीं कहीं है होड़।
संताणी कानी मीणी से नाम पड़ा कानोड़।।
नागरवेली पान और चाकू प्रसिद्ध है।
आदेश्वर भगवान लाट बड़ला की सिद्ध है।।
अठै अयोध्या संत तप्या लिखी पोथी राम रसायण।
उदय जैन से घोटत विद्या का सीखा पारायण।।
उदियापुर कानोड़ मित्र मंडल का थापण कीधा।
देश-विदेश रहे बंधुश्री जोड़्या लावा लीधा।।
महिमा वरणी न जाय ठिकाणा मोटा वाज्या।
जोद्धा केई लड़्या जंग चतुरंगी साज्या।।
या बारखड़ी बंचै बांचण्या मेंदर भाई।
चतुर सुणै ढांडा अण समझ्या लपकै लाई।।

सांगोद के न्हाण में किन्नरों की कलाबाजी

-प्रेमजी प्रेम-

सांगोद कस्बा राजस्थान के हाड़ौती अंचल में पांच सौ वर्ष पुराना गांव माना जाता है। इस गांव का सम्बन्ध सांगा पटेल नामक योद्धा से जोड़ा जाता है। यही कारण है कि होली के अवसर पर निकाली जानेवाली सवारियों में एक स्वांग 'सांगा' का भी होता है। इधर चिढ़ाने के लिए किसी कायर को देखकर उसे 'सांगोदिया' कह देना आम बात है। पता नहीं, इस कस्बे के साथ 'वृहन्नलाओं का विश्वविद्यालय' अर्थात् 'सांगोदियों की युनिवर्सिटी' नाम कैसे जुड़ा।

इसमें होली के अवसर पर किसी नये वृहन्नला को पुरानों की जमात में लेने का रिवाज है। इसके अनुसार जो भी नया वृहन्नला उस जाति से जुड़ना चाहे तो कोई पुराना व्यक्ति सिफारिश कर 'न्हाण' में पूर्व दिशा में प्रकाश फूटने से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में ही पुराने किन्नर द्वारा नवागन्तुक को निकटवर्ती ब्राह्मणी मन्दिर में ले जाया जाता है। वहां वह मत्था टेकता है और उनकी जाति या जमात में शामिल हो जाता है। सांगोद के लोगों को इस बात का पता ही नहीं चलता कि उनके गांव में ऐसा होता है। वे सब 'न्हाण' लोकोत्सव में व्यस्त रहते हैं।

होलिका दहन के पश्चात तृतीया और चतुर्थी को तथा षष्टि और सप्तमी को कस्बे के दो दलों द्वारा दो न्हाण मनाये जाते हैं। पहला 'बाजार का न्हाण' और दूसरा 'खाड़े का न्हाण' कहलाता है। बाजार के न्हाण में किसी भी कार्यक्रम के दौरान अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता जबकि खाड़े के न्हाण में खुलकर अश्लीलता खेली जाती है। लगभग पांच-पांच सौ कलाकार दोनों ही आयोजनों में भाग लेते हैं। दोनों ही न्हाण किन्नरों द्वारा अपने नृत्यों से संवारे जाते हैं।

दोनों न्हाण किन्नरों को प्रिय हैं लेकिन वे खाड़े के न्हाण में आना अधिक पसंद करते हैं। उसे वे प्राचीन और मूल न्हाण का आयोजन मानते हैं। वे इस अवसर पर निकलने वाली सवारियों में नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। केवल भवानी की सवारी ही ऐसी होती है जिसमें उनके नृत्य का प्रदर्शन नहीं होता। सांगा और बादशाह की सवारी में वे सर्वाधिक नाचते हैं। रात्रि में खाड़े में होने वाले 'चाचा बोहरा' नाटक में भी उनका नृत्य विशेष रूप से होता है। इस नाटक का आयोजन ब्राह्मणी के मन्दिर के सामने उजाड़ नदी के तट पर होता है। इसे पांच हजार से अधिक नर-नारी देखते हैं। जिस नये व्यक्ति को दीक्षा देनी होती है उसका नृत्य अधिक देखा जाता है।

इलाजी के द्वार नृत्य

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर वल्लभनगर में जमराबीज के दिन किन्नरों को गांव वाले ढोल लेकर बुलावा करने जाते हैं। यह बुलावा तीन बार होता है। तीसरे बुलावे पर शीतलामाता मार्ग होते हुए कबूतर चौक से इलाजी की मूर्ति के समक्ष पहुंचते हैं।

किन्नर गौरीबाई के नेतृत्व में ढोल की थाप पर नृत्य प्रारम्भ करने के बाद बाहर से बुलाए किन्नर नाचते-गाते इलाजी के द्वार से डांगी चौराया, दवी चौराया, कुल्मी चौराया, सामरों का चौक, गुर्जरों का चौक, प्रजापत मोहल्ला व मालियों का चौराया होते हुए देर रात अपने मुकाम पर पहुंचते हैं।

किन्नर गौरीबाई के अनुसार उनके गुरु सरदारबाई तथा दादागुरु गुलाबबाई थे। यह नृत्य गुलाबाबाई के कार्यकाल से चला आ रहा है। ये ब्यावर के मुखिया कान्ताबाई के अधीन आते हैं।

उनके ठिकाने ब्यावर, वल्लभनगर, मावली, विजयनगर, सलूम्बर, भीण्डर, धरियावद, आमेट, गंगरार, पुर, देलवाड़ा में हैं। पहले सांवलियाजी मन्दिर में यह नृत्य होता था। कमाई के नाम पर कुछ गांव हैं जहां से दोनों साख पर सुकड़ी लाते हैं। वल्लभनगर आजादी के बाद का नाम है। इससे पूर्व यह ऊंठाला के नाम से जाना जाता था।

हिंजड़ों का मन्दिर

-विष्णु खन्ना-

गुजरात के महासाणा से 32 किलोमीटर दूर बेछेंराजी के मन्दिर की आराध्या देवी के हिंजड़े प्रमुख आराधक हैं जो इसे अपनी कुलदेवी के रूप में मानते हैं और सारे अनुष्ठान यहीं सम्पन्न करते हैं।

यहां गुजरात के ही नहीं, अन्य राज्यों के हिंजड़े भी जीवन में एकबार आना अपना धर्म समझते हैं। यही कारण है कि इस मन्दिर को हिंजड़ों का मन्दिर भी कहा जाता है।

मन्दिर के एक भाग में मिट्टी के बने हुए मुण्ड बिखरे पड़े हैं। जनसाधारण में मान्यता है कि मन्दिर की देवी नि:संतान को संतानोत्पत्ति का वरदान देती है। वरदान पूरा होने पर दर्शनार्थ आनेवाले अपने साथ में मिट्टी से बना बच्चे का सिर चढ़ाते हैं तब ही अनुष्ठान पूरा माना जाता है।

सिर्फ एक दिन किन्नर विवाहित

-राजेन्द्र जांगिड़-

किन्नर सिर्फ एक ही दिन विवाहित रहकर फिर विधवा हो जाते हैं। इसका एक दिन के लिए शोक भी मनाया जाता है। शादी हर किन्नर करता है। मान्यता है कि शादी के बिना इनकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती। तमिलनाडु राज्य के विल्लुपुरम जिले के कूवगम गांव में एक ऐसा प्राचीन मन्दिर है जिसमें इरावन भगवान के केवल शीश की पूजा की जाती है। किन्नर इरावन भगवान को अपना आराध्य मानते हैं। उन्ही के साथ शादी करते हैं।

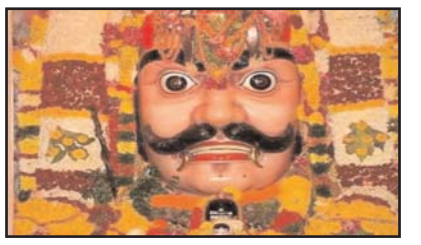

महाभारत की कथा के अनुसार एकबार द्रोपदी से शादी की एक शर्त के उल्लंघन के कारण अर्जुन को इंद्रप्रस्थ से निष्कासित कर एक साल की तीर्थयात्रा पर भेजा। वहाँ से निकल अर्जुन उत्तर-पूर्व की ओर जाता है जहां पर उसकी मुलाक़ात एक विधवा नाग राजकुमारी उलूपी से होती है। दोनों विवाह कर लेते हैं। कुछ समय पश्चात उलूपी एक पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम अरावन रखा जाता है। अरावन नागलोक में अपनी माँ के साथ रहता है। युवा होने पर वह पिता के पास आता है। तब कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध चल रहा था। अर्जुन उसे रणभूमि में भेज देता है।

एक समय ऐसा आता है जब पांडवों को अपनी जीत के लिए माँ काली के चरणों में स्वेच्छिक नर-बलि हेतु राजकुमार की जरुरत पड़ती

है तो अरावन खुद को नर-बलि हेतु प्रस्तुत करता है पर शर्त रखता है कि वह अविवाहित नहीं मरेगा। कोई राजा अपनी बेटी की शादी के लिए तैयार नहीं होता है। तब श्रीकृष्ण स्वयं को मोहिनी रूप में बदलकर अरावन से शादी करते हैं। अगले दिन अरावन अपना शीश माँ काली के चरणों में अर्पित करता है। अरावन की मृत्यु के पश्चात श्रीकृष्ण मोहिनी रूप में काफी देर तक विलाप करते हैं। श्रीकृष्ण पुरुष होते हुए भी स्त्री रूप में अरावन से शादी रचाते हैं यही कारण है कि किन्नर जो स्त्री रूप में पुरुष माने जाते हैं भी अरावन से एक रात की शादी रचाते हैं और उन्हें अपना आराध्य देव मानते हैं।

कूवगम गाँव में हर साल तमिल नववर्ष की पहली पूर्णिमा (फुल मून) को 18 दिनों तक चलने वाले उत्सव की शुरुआत होती है। इस उत्सव में पूरे भारतवर्ष और आस पास के देशों से किन्नर इकठ्ठा होते हैं। पहले 16 दिन गीतों पर खूब नाच-गान के साथ शादी की तैयारी करते हैं। 17वें दिन विशेष पूजा के बाद आरावन देवता के सामने मंदिर के पुराहित द्वारा किन्नरों के गले में मंगलसूत्र पहनाया जाता है जिसे थाली कहा जाता है। फिर अरावन की मूर्ति से शादी रचाते हैं। अंतिम दिन सारे कूवगम गांव में अरावन की प्रतिमा को घूमाया जाता है और फिर उसे तोड़ दिया जाता है। उसके बाद दुल्हन बने किन्नर अपना मंगलसूत्र तोड़ देते हैं। चेहरे पर किए सारे श्रृंगार को मिटा देते हैं और सफेद कपड़े पहन जोर जोर से छाती पीटते हैं, खूब रोते हैं। उसके बाद आरावन उत्सव खत्म हो जाता है।

'फाईनेंशल एवं डिजिटल साक्षरता' अभियान लॉन्च

उदयपुर (वि.)। कोलगेट-पॉमोलिव (इंडिया) लि. ने सेवा मंदिर के साथ साझेदारी में काया विलेज़ ट्रेनिंग एवं लर्निंग सेंटर में डिजिटल एवं फाईनेंशल लिटरेसी कार्यक्रम प्रारंभ किया। उदयपुर एवं राजसमंद जिलों में महिलाओं के बीच डिजिटल और वित्तीय साक्षरता लाने के लिए चलाए जा रहे इस प्रोजेक्ट के तहत,

ग्रामीण एवं आदिवासी समुदायों की 50 महिलाएं मौजूद रहीं और 250 महिलाएं वर्चुअल रूप से इसमें शामिल हुईं।

पांच वर्षीय अभियान के तहत, 100 महिलाओं के कैडर, डिजिटल स्माईल सखियों को प्रशिक्षित किया गया है और दूरदराज के गांवों एवं शहरी आवासों में वो मीटिंग्स एवं अभियानों द्वारा 50,000 आदिवासी, ग्रामीण एवं शहरी वंचित महिलाओं तक पहुंचेंगी। ये सखियां महिलाओं को मोबाईल बैंकिंग सीखने एवं ऑनलाईन माध्यमों द्वारा बैंक खातों का संचालन और इंश्योरेंस एवं सोशल सपोर्ट स्कीम्स का उपयोग करने में मदद करेंगी।

लंदन में रेस्टोरेंट हेरिटेज के साथ लॉन्च

उदयपुर (वि.)। राजस्थान में जन्मे मिशलिन प्लेट विजेता शेफ दयाशंकर शर्मा ने हाल में लंदन में अपने नए रेस्टोरेंट हेरिटेज के साथ एक डिलीवरी सर्विस और होम डाइनिंग अनुभव को लॉन्च किया है। यह साउथ लंदन पोस्टल कोड्स तक बेहतरीन भारतीय फूड को लेकर आया है। इस किचन और रेस्टोरेंट के हेड और मालिक शेफ दयाशंकर शर्मा हैं, जिन्होंने अपने मिशलिन-स्टार्ड अनुभव के साथ कुछ पॉपुलर क्लासिक को कंटेम्पररी ट्विस्ट दिया है। मिशलिन-स्टार्ड टैमेरिंड और केंसिंग्टन क्लासिक जायका सहित 30 सालों के कलिनरी अनुभव के साथ शेफ शर्मा ने परम्परागत और ऑथेंटिक भारतीय रेसिपीज और इंग्रेडिएन्ट्स को सेलिब्रेट करने वाले एक मेन्यू को तैयार किया है। इसमें मौसमी प्रोड्यूस और आधुनिक कुकिंग टेक्निक का इस्तेमाल उन्होंने खास तौर पर किया है। शेफ दयाशंकर शर्मा को 32 साल के कलिनरी अनुभव है। शेफ शर्मा लंदन में फॉरेन हॉस्पिटैलिटी के विद्यार्थियों को भारत की हेरिटेज रेसिपीज सिखाने के लिए क्लासेज भी लेते हैं।

साधारण लक्षणों से हो सकती है किडनी की बीमारी : डॉ. सोनी

उदयपुर (वि.)। गुर्दे की बीमारी की शुरुआत साधारण सी लगने वाली किसी भी बीमारी जैसे रक्तचाप का बढ़ना, डायबिटीज, पेशाब में इन्फेक्शन आदि से हो सकती है। शुरुआत में इनके कोई लक्षण नहीं आते हैं पर जब लक्षण आने शुरु होते हैं तब तक गुर्दे का अधिकांश भाग नष्ट हो जाता है। ये विचार पारस जे. के. हॉस्पिटल के गुर्दा रोग विशेषज्ञ डॉ. आशुतोष सोनी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि गुर्दे की बीमारी के एडवांस स्टेज में थकान, खुन की कमी, दर्द, मानसिक अस्थिरता, नींद में कमी, रात्रि को बार-बार पेशाब आना, अपच आदि लक्षण हो सकते हैं। वर्तमान में महत्वपूर्ण बात यह है कि गुर्दे के रोगों को एडवांस स्टेज तक बढ़ने से रोका जाए। किडनी फेल होने पर डायलेसिस की व्यवस्था व किडनी ट्रांसप्लांट का बंदोबस्त किया जाए।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।